مجاز کی شاعری
مرتبہ
امر دہلوی

مجھے پینے دے، پینے دے کہ تیرے جامِ لعلیں میں
ابھی کچھ اور ہے، کچھ اور ہے، کچھ اور ہے ساقی

مجازؔ لکھنوی

کم قیمت میں معیاری اور مقبول ادب پیش کرنے والے

سٹار سیریز کی یہ پیش کش اپنی طرح کی
واحد کتاب ہے
جس میں
آپ کے پسندیدہ شاعر کا چنیدہ کلام
اُردو اور ہندی میں ایک ساتھ
پیش کیا جا رہا ہے
قارئین اس سلسلے کے بارے میں اپنی
رائے سے نوازیں۔

اِس خصوصی سلسلے کی دوسری کتابیں

- ظفرؔ کی شاعری
- غالبؔ کی شاعری
- شکیلؔ کی شاعری
- ساحرؔ کی شاعری

(عمدہ آفسیٹ طباعت، اردو ہندی میں ایک ساتھ سٹار پاکٹ سیریز)

مجاز کی شاعری

(اردو، ہندی میں یکجا)

مرتب:

آمر دہلوی

DEHLVI AMAR (Comp.)

MAJAZ KI SHAIRI

(POETRY COLLECTION)

STAR, NEW DELHI. 1983

Rs.5.00

سول ڈسٹری بیوٹرز

سٹار بک سینٹر 1641۔ دریبہ کلاں، دہلی ۱۱۰۰۰۶

ناشر:

سٹار پبلیکیشنز (پرائیوٹ) لمیٹڈ

آصف علی روڈ، نئی دہلی ۱۱۰۰۰۲

پہلا ایڈیشن: ۱۹۸۳ء

قیمت: صرف پانچ روپے -/5

طابع:۔

شاعر کے بارے میں

مجازؔ لکھنوی سنہ ۱۹۱۱ء میں اودھ کے مشہور شہر بارہ بنکی کے قصبہ ردولی میں پیدا ہوئے۔ والدین نے اسرار الحق نام رکھا۔ مجازؔ تخلص اختیار کیا۔ ابتدا سے ہی ادبی اور تعلیمی ماحول میں پرورش پانے کی وجہ سے شاعری سے دلچسپی رہی۔ علی گڑھ مسلم یونیورسٹی سے بی اے پاس کرنے کے بعد کچھ دنوں آل انڈیا ریڈیو دہلی میں اور کچھ دنوں حکومت بمبئی کے محکمۂ اطلاعات میں ملازم رہے۔ بعد ازاں حلقۂ ادب لکھنؤ کے سرگرم رکن اور "نیا ادب" کے ادارہ سے منسلک رہنے کے بعد ہارڈنگ لائبریری دہلی میں ملازم ہو گئے۔ بمبئی کے دوران قیام فلمی دنیا سے بھی ان کی وابستگی رہی۔ اور انہوں نے کئی فلموں میں گیت بھی لکھے۔

مجازؔ ایک حساس اور عالی ظرف انسان اور حقیقت نگار شاعر تھے۔ اسی لئے ملک کی بڑھتی ہوئی متوسط طبقہ کی ابتری، بے روزگاری کا خوفناک بھوت، گرتے ہوئے سماجی اخلاق، بدلتے ہوئے انسانی معیار سے بھی وہ بے حد متاثر ہوئے تھے اور اس ہیبت ناک سماج کے خلاف

احتجاج کرتے رہے اور دعوت انقلاب دیتے رہے۔ انہوں نے بیداری کا پیغام سنایا اور فرسودہ نظام کے خلاف جنگ کرنے کے لئے آمادہ کیا۔

اپنی شاعری کے ابتدائی دور سے گذر کر مجاز نے محسوس کیا کہ شاعری کا مقصد خطیبانہ نظمیں لکھنا ہی نہیں ہے بلکہ ایک فنکار کے لئے ضروری ہے کہ وہ اپنے اردگرد کے حالات کا مطالعہ کرے اور اسے سمجھنے کی کوشش کرے۔ مجاز نے ڈرائنگ روم میں شعر کہنا شروع کیا۔ وہاں سے اٹھ کر پبلک میٹنگ میں نغمہ سرا ہوئے۔ پھر فن کی دنیا میں داخل ہو کر اپنے جذبات کو اس طرح بیان کرنے لگے کہ ان میں ہمہ گیری آ گئی۔ مجاز کے یہاں جذبات نگاری کوٹ کوٹ کر بھری ہوئی ہے۔ مایوسی، ناامیدی اور قنوطیت کے عناصر ان کے یہاں بہت کم ہیں۔ جوانی کی سرمستی اور امنگوں نے ان کے کلام کو ایک خاص دلکشی بخشی ہے۔

مجاز کے کلام کا مجموعہ ۱۹۳۸ء میں آہنگ کے نام سے شائع ہو کر کافی مقبول ہوا۔ ۱۹۵۵ء میں اردو کے اس مقبول رومانی شاعر نے صرف ۴۴ سال کی مختصر سی عمر میں اس دنیا کو خیرباد کہا۔

امر دہلوی

मजाज़
की शायरी

मुझे पीने दे, पीने दे कि तेरे जाम-ए-लाअली में
अभी कुछ और है, कुछ और है, कुछ और है साक़ी

'मजाज़' लखनवी

स्टार सीरीज़ के इस क्रम में प्रस्तुत कर रहे हैं आप के प्रिय उर्दू शायरों की चुनी हुई शायरी—उर्दू और हिन्दी लिपि में एक साथ !

इस क्रम में अन्य उर्दू कवियों की शायरी के संकलन भी अवश्य पढ़िए !

प्रकाशक

स्टार पब्लिकेशंज़ (प्रा०) लि०

आसफ़ अली रोड, नयी दिल्ली-110002

'मजाज़'
की
शायरी

(उर्दू, हिन्दी में एक साथ)

संकलन कर्ता

'अमर' देहलवी

Dehlvi, Amar (Comp.) : MAJAZ KI SHAIRI
(Poetry Collection)
Star, New Delhi 1983
Rs. 5·00

प्रथम संस्करण
1983

वितरक :
स्टार पब्लिकेशंज (सेल्ज)
1641, दरीबा कलां, दिल्ली-110006

प्रकाशक :
स्टार पब्लिकेशंज (प्रा०) लि०
आसफ़ अली रोड, नयी दिल्ली-110002

▭
मूल्य : पांच रुपये मात्र (5·00)

▭
मुद्रक :—जुपीटर आफसैट प्रैस
शाहदरा, दिल्ली-११००३२

शायर के बारे में

'मजाज़' लखनवी 1911 ई० में अवध के प्रसिद्ध नगर बाराबंकी के रदौली शहर में पैदा हुए। माता-पिता ने असरार उलहक़ नाम रखा। 'मजाज़' तखल्लुस अपनाया। शुरू से ही साहित्यक और शैक्षणिक माहौल में परवरिश पाने के कारण शायरी से दिलचस्पी रही। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से बी० ए० पास करने के बाद कुछ दिनों आल इण्डिया रेडियो देहली में और कुछ दिनों बम्बई सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में कार्य किया। इसके बाद 'हलक़ा-ए-अदब' लखनऊ के कार्यकर्ता और 'नया अदब' संस्था से जुड़े रहने के बाद हार्डिंग लाइब्रेरी देहली में मुलाज़िम हो गए। बम्बई में रहते हुए फिल्मी दुनिया से भी जुड़े और कई फिल्मों के गीत भी लिखे।

'मजाज़' एक हस्सास और आली-ज़र्फ़ इंसान और हकीक़त निगार शायर थे। इसीलिए देश में बढ़ती हुई 'मिडिल क्लास' की अबतरी, बेरोज़गारी का खौफ़नाक भूत, गिरते हुए समाजी स्तर और बदलते हुए इन्सानी मेआर से वे बेहद प्रभावित हुए थे और उस हैबतनाक समाज के खिलाफ़ आवाज़ उठाते रहे और दावत-ए-इन्क़लाब देते रहे उन्होंने बेदारी का पैग़ाम सुनाया और फरसूदा निज़ाम के खिलाफ़ जंग करने के लिए तैयार किया।

अपनी शायरी के प्रारम्भिक दौर से गुज़रकर 'मजाज़' ने महसूस किया कि शायरी का मक़सद उपदेश वाली नज़्मे लिखना ही नहीं, वरन् एक फन्कार के लिए ज़रूरी है कि वह अपने आस-पास के हालात का जायज़ा ले और उसे समझने की कोशिश करे, 'मजाज़' ने

ड्राइंग-रूम में शे'र कहना शुरू किया, वहां से उठकर पब्लिक मीटिंग में नग़मा सरा हुए, फिर फ़न की दुनिया में दाखिल होकर अपने जज़्बात को इस प्रकार ब्यान करने लगे कि उनमें हमागीरी आ गई। 'मजाज़' के यहां जज़्बात निगारी कूट-कूटकर भरी हुई है। मायूसी नाउम्मीदी और क़नूतियत के लक्षण बहुत कम है, जवानी की सर-मस्ती और उमंगों ने उनके कलाम को एक खास दिलकशी बख्शी है।

'मजाज़' के कलाम का मजमुआ 1938 ई० में 'आहंग' के नाम से प्रकाशित होकर काफ़ी प्रसिद्ध हुआ। 1955 ई० में उर्दू के इस प्रसिद्ध रूमानी शायर ने केवल 44 वर्ष की मुख्तसिर आयु में इस संसार को अलविदा कहा।

'अमर' देहलवी

उर्दू के लोकप्रिय शायरों

की चुनी हुई शायरी अब

उर्दू और हिन्दी लिपि में एक साथ !

स्टार पॉकिट सीरीज़ के अन्तर्गत एक नया क्रम शुरू किया जा रहा है—जिसमें आपके प्रिय उर्दू शायरों की रचनाओं का संकलन।

उर्दू—हिन्दी दोनों भाषाओं में आमने-सामने प्रस्तुत किया जा रहा है।

इस क्रम की पहली पाँच पुस्तकें इसी मास प्रस्तुत की जा रही हैं।

यदि पाठकों को यह पुस्तकें पसन्द आईं तो हमारा प्रयास होगा।

कि उर्दू के सभी लोकप्रिय शायरों की शायरी इस क्रम में प्रस्तुत का जाए

अतः पाठकों से निवेदन है कि इन पुस्तकों के बारे में अपने विचार हमें अवश्य लिखें।

—प्रकाशक

چھلکے تری آنکھوں سے شراب اور زیادہ
مہکیں ترے عارض کے گلاب اور زیادہ
اللہ کرے زورِ شباب اور زیادہ

سچ تو یہ ہے مجازؔ کی دنیا
حسن اور عشق کے سوا کیا ہے

تم بھی مجازؔ انسان ہو آخر لاکھ چھپاؤ عشق اپنا
یہ بھید مگر کھل جائے گا، یہ راز مگر افشا ہو گا
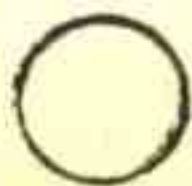
छलके तेरी आँखों से शराब और ज्यादा
महकें तेरे आरिज़ के गुलाब और ज्यादा
अल्लाह करे ज़ोर-ए-शबाब और ज्यादा

○

सच तो यह है 'मजाज़' की दुनिया
हुस्न और इश्क़ के सिवा क्या है

○

तुम भी 'मजाज़' इंसां हो आख़िर, लाख छुपाओ इश्क़ अपना
यह भेद मगर खुल जायेगा, यह राज़ मगर अफ़शा होगा

تعارف

خوب پہچان لو اسرار ہوں میں
جنسِ الفت کا طلبگار ہوں میں
عشق ہی عشق ہے دنیا میری
فتنۂ عقل سے بیزار ہوں میں
چھیڑتی ہے جسے مضرابِ الم
سازِ فطرت کا وہی تار ہوں میں
عیب، جو حافظ و خیام میں تھا
ہاں کچھ اس کا بھی گنہگار ہوں میں
زندگی کیا ہے گناہِ آدم
زندگی ہے تو گنہگار ہوں میں
میری باتوں میں مسیحائی ہے
لوگ کہتے ہیں کہ بیمار ہوں میں
اک لپکتا ہوا شعلہ ہوں میں
اک چلتی ہوئی تلوار ہوں میں

۱۹۳۵ء

तआरुफ़
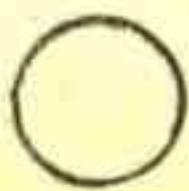
ख़ूब पहचान लो 'असरार' हूँ मैं
जिन्स-ए-उलफ़त[1] का तलबगार[2] हूँ मैं

इश्क़ ही इश्क़ है दुनिया मेरी
फितना-ए-अक़्ल से बेज़ार[3] हूँ मैं

छेड़ती है जिसे मिज़राब-ए-अलम[4]
साज़-ए-फ़ितरत[5] का वही तार हूँ मैं

ऐब[6] जो हाफ़िज़-ओ-ख़य्याम में था
हाँ कुछ इसका भी गुनहगार हूँ मैं

ज़िन्दगी क्या है गुनाह-ए-आदम
ज़िन्दगी है तो गुनहगार हूँ मैं

मेरी बातों में मसीहाई[7] है है
लोग कहते हैं कि बीमार हूँ मैं

एक लपकता हुआ शोला हूँ मैं
एक चलती हुई तलवार हूँ मैं

1935

□

---

1. मुहब्बत 2. चाहनेवाला 3. नफ़रत करना 4. ग़म की चोट 5. क़ुदरत 6. बुराई 7. बीमार को शिफ़ा देने वाला ।

غزل

حسن پھر فتنہ گر ہے کیا کہیئے
دل کی جانب نظر ہے کیا کہیئے

پھر وہی رہگذر ہے کیا کہیئے
زندگی راہ پر ہے کیا کہیئے

حسن خود پردہ در ہے کیا کہیئے
یہ ہماری نظر ہے کیا کہیئے

آہ تو بے اثر تھی برسوں سے
نغمہ بھی بے اثر ہے کیا کہیئے

حسن ہے اب نہ حسن کے جلوے
اب نظر ہی نظر ہے کیا کہیئے

آج بھی مجاز خاک نشیں
اور نظر عرش پر ہے کیا کہیئے

سنہ ۱۹۳۶ء
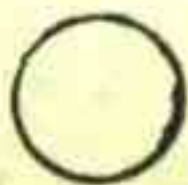
ग़ज़ल

हुस्न फिर फ़ितनागर[1] है क्या कहिये
दिल की जानिब[2] नज़र है क्या कहिये

फिर वही रहगुज़र[3] है क्या कहिये
ज़िन्दगी राहबर[4] है क्या कहिये

हुस्न ख़ुद पर्दादर[5] है क्या कहिये
यह हमारी नज़र है क्या कहिये

आह तो बे-असर थी बरसों से
नग़मा भी बे-असर है क्या कहिये

हुस्न है अब न हुस्न के जलवे
अब नज़र ही नज़र है क्या कहिये

आज भी है 'मजाज़' ख़ाक-नशीं[6]
और नज़र अर्श[7] पर है क्या कहिये

1936

□

---

1. फ़ितने पैदा करने वाला 2. तरफ़ 3. आम रास्ता 4. रास्ता दिखाने वाला 5. पर्दा करने वाला 6. ज़मीन पर रहने वाला। 7. आसमान।

غزل

حسن کو بے حجاب ہونا تھا
شوق کو کامیاب ہونا تھا

ہجر میں کیفِ اضطراب نہ پوچھ
خونِ دل بھی شراب ہونا تھا

تیرے جلووں میں گھر گیا آخر
ذرّے کو آفتاب ہونا تھا

کچھ تمہاری نگاہ کافر تھی
کچھ مجھے بھی خراب ہونا تھا

رات تاروں کا ٹوٹنا بھی مجازؔ
باعثِ اضطراب ہونا تھا

۱۹۳۰ء

ग़ज़ल

हुस्न को बे-हिजाब[1] होना था
शौक़ को कामयाब होना था

हिज्र[2] में कैफ़-ए-इज़तराब[3] न पूछ
ख़ून-ए-दिल भी शराब होना था

तेरे जलवों में घिर गया आख़िर
ज़र्रे को आफ़ताब होना था

कुछ तुम्हारी निगाह काफ़िर थी
कुछ मुझे भी ख़राब होना था

रात तारों का टूटना भी 'मजाज़'
बाइस-ए-इज़तराब[4] होना था

1930

□

---

1. बेपर्दा 2. जुदाई 3. बेचैनी की हालत 4. बेचैनी का कारण।

نمائش

وہ کچھ دوشیزگانِ ناز پرور
کھڑی ہیں اک لِساطی کی دکاں پر
نظر کے سامنے ہے ایک محشر
اور اک محشر ہے میرے دل کے اندر
وہ رُخساروں پہ ہلکی ہلکی سُرخی
لبوں میں پر فشاں روحِ گُلِ تر
وہ خوشبو آرہی ہے پیرہن سے
فضا ہے دور تک جس سے معطّر
نشاطِ رنگ و بُو سے چُور آنکھیں
شرابِ ناب سے لبریز ساغر
خرامِ ناز سے نغمے جگاتی
وہ چل دیں ایک جانب مسکرا کر
کسی کی حسرتیں پامال کرتی
کسی کی حسرتیں ہمراہ لے کر
ادھر ہم نے اک آہِ سرد کھینچی
ہنسی پھر آگئی اپنے کیے پر

۱۹۳۱ء

नुमाएश

वह कुछ दोशीज़गान-ए-नाज परवर[1]
खड़ी हैं एक बिसाती की दुकां पर

नज़र के सामने है एक महशर
और एक महशर है मेरे दिल के अन्दर

वह रुखसारों पे हल्की-हल्की सुर्खी
लबों पर पुरफ़िशाँ[2] रूह-ए-गुले तर

वह खुश्बू आ रही है पैरहन से
फ़िज़ा है दूर तक जिस से मुअत्तर[3]

निशात[4]-ए-रंग बू से चूर आंखें
शराब-ए- नाब से लबरेज़ सागर

खराम[5]-ए-नाज़ से नग़में जगाती
वह चल दीं एक जानिब मुस्कुराकर

किसी की हसरतें पामाल[6] करती
किसी की हसरतें हमराह लेकर

इधर हमने एक आह-ए-सर्द खेंची
हँसी फिर आ गई अपने किये पर

□ 1931

---

1. जवान लड़कियां नाज़-ओ-अदा के साथ 2. गुलाब के फूल जैसी सुर्खी 3. खुशबूदार 4. खुशी 5. बड़ी अदा की चाल 6. मिटाना।

غزل

کمالِ عشق ہے دیوانہ ہو گیا ہوں میں
یہ کس کے ہاتھ سے دامن چھڑا رہا ہوں میں

تمہیں تو ہو جسے کہتی ہے ناخدا دنیا
بچا سکو تو بچا لو، کہ ڈوبتا ہوں میں

یہ میرے عشق کی مجبوریاں معاذ اللہ
تمہارا راز تمہیں سے چھپا رہا ہوں میں

اس اِک حجاب پہ سو بے حجابیاں صدقے
جہاں سے چاہتا ہوں تم کو دیکھتا ہوں میں

بتانے والے وہیں پر بتاتے ہیں منزل
ہزار بار جہاں سے گزر چکا ہوں میں

کبھی یہ زعم کہ تو مجھ سے چھپ نہیں سکتا
کبھی یہ وہم کہ خود بھی چھپا ہوا ہوں میں

مجھے سُنے نہ کوئی مستِ بادۂ عشرت
مجازؔ ٹوٹے ہوئے دل کی اک صدا ہوں میں

۱۹۳۱ء

ग़ज़ल

कमाल-ए-इश्क़[1] है दीवाना हो गया हूँ मैं
यह किसके हाथ से दामन छुड़ा रहा हूँ मैं

तुम्हीं तो हो जिसे कहती है नाख़ुदा[2] दुनिया
बचा सको तो बचा लो, कि डूबता हूँ मैं

यह मेरे इश्क़ की मजबूरियाँ मआज़-अल्लाह[3]
तुम्हारा राज़ तुम्हीं से छुपा रहा हूँ मैं

इस इक हिजाब[4] पे सौ बे-हिजाबियाँ सदक़े
जहाँ से चाहता हूँ तुमको, देखता हूँ मैं

बताने वाले वहीं पर बताते हैं मंज़िल
हज़ार बार जहाँ से गुज़र चुका हूँ मैं

कभी यह ज़ोम कि तू मुझसे छुप नहीं सकता
कभी यह वहम कि ख़ुद भी छुपा हुआ हूँ मैं

मुझे सुने न कोई मस्त-ए-बादा-ए-इशरत[5]
'मजाज़' टूटे हुए दिल की इक सदा हूँ मैं

1931

□

---

1. इश्क़ के कमाल तक पहुँचना 2. कश्ती खेने वाला 3. अल्लाह की पनाह 4. पर्दा 5. इशरत की शराब में मस्त।

غزل

سارا عالم گوش بر آواز ہے
آج کن ہاتھوں میں دل کا ساز ہے

تو جہاں ہے زمزمہ پرواز ہے
دل جہاں ہے گوش بر آواز ہے

ہاں ذرا جرأت دکھا اے جذبِ دل
حسن کو پردے پہ اپنے ناز ہے

ہم نشیں دِل کی حقیقت کیا کہوں
سوز میں ڈوبا ہوا اِک ساز ہے

آپ کی مخمور آنکھوں کی قسم
میری مے خواری ابھی تک راز ہے

ہنس دیے وہ میرے رونے پر مگر
اُن کے ہنس دینے میں بھی اک راز ہے

حسن کو ناحق پشیماں کر دیا
اے جنوں یہ بھی کوئی انداز ہے

ساری محفل جس پہ جھوم اٹھی مجازؔ
وہ تو آوازِ شکستِ ساز ہے

۱۹۳۱ء
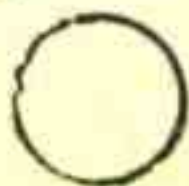
ग़ज़ल

सारा आलम गोश-बर-आवाज़[1] है
आज किन हाथों में दिल का साज़[2] है

तू जहाँ है ज़मज़मा परवाज़ है
दिल जहाँ है गोश-बर-आवाज़ है

हाँ ज़रा जुरअत दिखा ऐ जज़्बे-दिल
हुस्न को पर्दे पे अपने नाज़ है

हम नशीं दिल की हक़ीक़त क्या कहूँ
सोज़ में डूबा हुआ एक साज़ है

आपकी मख़मूर[3] आँखों की क़सम
मेरी मयख़्वारी अभी तक राज़ है

हँस दिये वह मेरे रोने पर मगर
उनके हँस देने में भी एक राज़ है

हुस्न को नाहक़ पशेमाँ[4] कर दिया
ऐ जुनूँ यह भी कोई अन्दाज़ है

सारी महफ़िल जिस पे झूम उट्ठी 'मजाज़'
वह तो आवाज़-ए-शिकस्त-ए-साज़ है

□ 1931

---

1. आवाज़ की ओर कान लगाए हुए है 2. गीत 3. नशे में भरा हुआ 4. शर्मिन्दा ।

غزل

نگاہِ لطف مت اُٹھا خوگرِ آلام رہنے دے
ہمیں ناکام رہنا ہے ہمیں ناکام رہنے دے

کسی معصوم پر بیداد کا الزام کیا معنی
یہ وحشت خیز باتیں عشقِ بد انجام رہنے دے

ابھی رہنے دے دل میں شوقِ شوریدہ کے ہنگامے
ابھی سر میں محبت کا جنونِ خام رہنے دے

ابھی رہنے دے کچھ دن لطفِ نغمہ مستیٔ صہبا
ابھی یہ ساز رہنے دے ابھی یہ جام رہنے دے

کہاں تک حسن بھی آخر کرے پاسِ رواداری
اگر یہ عشق خود ہی فرقِ خاص و عام رہنے دے

بہ ایں رندی مجازؔ اک شاعرِ مزدور و دہقاں ہے
اگر شہروں میں وہ بدنام ہے بدنام رہنے دے

۱۹۳۲ء
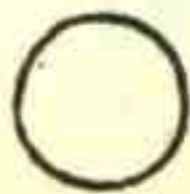
ग़ज़ल

निगाह-ए-लुत्फ़ मत उठा ख़ूगर-ए-ग्रालाम[1] रहने दे
हमें नाकाम रहना है, हमें नाकाम रहने दे

किसी मासूम पर बेदाद[2] का इलज़ाम क्या मानी
यह वहशत खेज़ बातें इश्क-ए-बद ग्रन्जाम रहने दे

ग्रभी रहने दे दिल में शौक़-ए-शोरीदा के हंगामें
ग्रभी सर में मुहब्बत का जुनून-ए-खाम[3] रहने दे

ग्रभी रहने दे कुछ दिन लुत्फ़-ए-नग़मा मस्ती-ए-सहबा
ग्रभी यह साज़ रहने दे, ग्रभी यह जाम रहने दे

कहाँ तक हुस्न भी ग्राखिर करे पास-ए-रवादारी[4]
ग्रगर यह इश्क खुद ही फ़र्क़ खास-ग्रो-ग्राम रहने दे

बईं रिन्दी 'मजाज़' एक शायर-ए-मज़दूर-ग्रो-दहक़ां[5] है
ग्रगर शाहरों में वह बदनाम है बदनाम रहने दे

1932

□

---

1. मुसीबत के ग्रादी 2. ज़ुल्म 3. बेकार का पागलपन 4. लेहाज
5. देहाती मज़दूर।

غزل

رہِ شوق سے اب ہٹا چاہتا ہوں
کشش حُسن کی دیکھنا چاہتا ہوں
کوئی دل سا دردآشنا چاہتا ہوں
رہِ عشق میں رہنما چاہتا ہوں
تجھی سے تجھے چھیننا چاہتا ہوں
یہ کیا چاہتا ہوں یہ کیا چاہتا ہوں
خطاؤں پہ جو مجھ کو مائل کرے پھر
سزا اور ایسی سزا چاہتا ہوں
وہ مخمور نظریں، وہ مدہوش آنکھیں
خرابِ محبّت ہوا چاہتا ہوں
وہ آنکھیں جھکیں وہ کوئی مُسکرایا
پیامِ محبّت سُنا چاہتا ہوں
تجھے ڈھونڈتا ہوں تری جستجو ہے
مزا ہے کہ خود گم ہوا چاہتا ہوں
کہاں کا کرم اور کیسی عنایت
مجازؔ اب جفا ہی جفا چاہتا ہوں

۱۹۳۲ء

ग़ज़ल

रह-ए-शौक़[1] से अब हटा चाहता हूँ
कशिश हुस्न की देखना चाहता हूँ

कोई दिल-सा दर्द आशना चाहता हूँ
रह-ए-इश्क़ में रहनुमा[2] चाहता हूँ

तुझी से तुझे छीनना चाहता हूँ
यह क्या चाहता हूँ यह क्या चाहता हूँ

ख़ताओं पह जो मुझको माइल करे फिर
सज़ा और ऐसी सज़ा चाहता हूँ

वह मख़मूर नज़रें वह मदहोश आँखें
ख़राब-ए-मुहब्बत[3] हुआ चाहता हूँ

वह आँखें झुकीं वह कोई मुस्कुराया
प्याम-ए-मुहब्बत सुना चाहता हूँ

तुझे ढूंढ़ता हूँ तेरी जुस्तजू है
मज़ा है कि ख़ुद गुम हुआ चाहता हूँ

कहाँ का करम और कैसी इनायत
'मजाज़' अब जफ़ा ही जफ़ा[4] चाहता हूँ

1932

□

---

1. शौक़ का रास्ता 2. रास्ता दिखाने वाला 3. मुहब्बत में ख़राब होना 4. बेवफ़ाई।

غزل

خامشی کا تو نام ہوتا ہے
ورنہ یوں بھی کلام ہوتا ہے

عشق کو پوچھتا نہیں کوئی
حسن کا احترام ہوتا ہے

آنکھ سے آنکھ جب نہیں ملتی
دل سے دِل ہم کلام ہوتا ہے

حُسن کو شرمسار کرنا ہی
عشق کا انتقام ہوتا ہے

اللہ اللہ یہ نازِ حُسن مجاز
انتظارِ سلام ہوتا ہے

۱۹۳۲ء
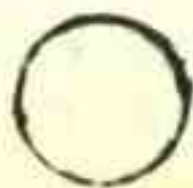
ग़ज़ल

ख़ामशी का तो नाम होता है
वरना यूं भी कलाम[1] होता है

इश्क़ को पूछता नहीं कोई
हुस्न का एहतराम[2] होता है

आंख से आंख जब नहीं मिलती
दिल से दिल हमकलाम[3] होता है

हुस्न को शर्मसार[4] करना ही
इश्क़ का इन्तेक़ाम[5] होता है

अल्ला-अल्ला यह नाज़-ए-हुस्न-ए-'मजाज़'
इन्तज़ार-ए-सलाम होता है

1932

□

---

1. बातचीत 2. इज़्ज़त 3. बात करना 4. शर्मिन्दा करना
5. बदला लेना।

نغمۂ ٹیگور
(ترجمہ از گارڈنر)

میں نے ہنگامِ صبح ، اَے دنیا
تیرے گلشن سے ایک گُل توڑا
اپنے سینے پہ دی جگہ اُس کو
چُبھ گیا دل میں لیکن اِک کانٹا
شام ہوتے ہی میں نے یہ دیکھا
گُل تھا پژمردہ درد باقی تھا
حُسن و خوشبو میں اِک سے اِک بڑھکر
اور بھی ہوں گے تجھ میں گُل پیدا
میری گل چینیوں کا وقت مگر
ایک مدّت ہوئی کہ ختم ہوا
اور اب جب کہ رات طاری ہے
گُل نہیں پاس، درد باقی ہے

۱۹۳۲ء

○

नग़मा-ए-टैगोर

(तर्जुमा अज़ गार्डनर)

मैंने हंगाम-ए-सुब्हा[1], ऐ-दुनिया
तेरे गुलशन से एक गुल तोड़ा

अपने सीने पे दी जगह उसको
चुभ गया दिल में लेकिन एक काँटा

शाम होते ही मैंने यह देखा
गुल था पज़मुर्दा[2] दर्द बाक़ी था

हुस्न-ओ-खश्बू में इक से इक बढ़कर
और भी होंगे तुझमें गुल पैदा

मेरी गुलचीनियों[3] का वक़्त मगर
एक मुद्दत हुई कि खत्म हुआ

और अब जबकि रात तारी[4] है
गुल नहीं पास दर्द बाक़ी है

1932

□

1. सुबह की घमा घमी 2. टूटा हुआ दिल 3. ख़ुशग्राहग बातें
4. फैली हुई।

غزل

یہ میری دنیا یہ میری ہستی — نغمہ طرازی، صہبا پرستی

شاعر کی دنیا، شاعر کی ہستی — یا نالۂ غم، یا شورِ مستی

سب سے گریزاں، سب پر برستی — آنکھوں کی مستی مہنگی نہ سستی

یا خلد و ساقی اے جذبِ مستی — یا ٹکڑے ٹکڑے دامانِ ہستی

محوِ سفر ہوں، گرمِ سفر ہوں — میری نظر میں رفعت نہ پستی

ان انکھڑیوں کا عالم نہ پوچھو — صہبا ہی صہبا، مستی ہی مستی

وہ آ بھی جاتے، وہ ہو بھی جاتے — چشمِ تمنا پھر بھی ترستی

اُن کا کرم ہے اُن کی محبت
کیا میرے نغمے کیا میری ہستی

۱۹۳۲ء

ग़ज़ल

यह मेरी दुनिया यह मेरी हस्ती[1]
नग़मा तराज़ी सहबा परसती

शायर की दुनिया, शायर की हस्ती
था नाला-ए-ग़म[2] या शोर-ए-मस्ती

सबसे गुरेज़ां, सब पर बरसती
आंखों की मस्ती महगी न सस्ती

या खुल्द-ओ-साक़ी, ऐ जज़्ब-ए-मस्ती
या टुकड़े-टुकड़े दामान-ए-हस्ती

महव-ए-सफ़र हूँ, गर्म-ए-सफर हूँ
मेरी नज़र में रफ़अत[3] न पस्ती

इन अंखड़ियों का आलम न पूछो
सहबा ही सहबा, मस्ती ही मस्ती

वह आ भी जाते, वह हो भी जाते
चश्म--ए-तमन्ना[4] फिर भी तरसती

उनका करम है उनकी मुहब्बत
क्या मेरे नग़में, क्या मेरी हस्ती

□ 1932

---

1. जिन्दगी 2. गीत 3. बुलन्दी 4. तमन्ना और आरज़ू की आँखों में झलक।

غزل

سینے میں ان کے جلوے چھپائے ہوئے تو ہیں
ہم اپنے دل کو طور بنائے ہوئے تو ہیں

تاثیرِ جذبِ شوق دکھائے ہوئے تو ہیں
ہم تیرا ہر حجاب اٹھائے ہوئے تو ہیں

ہاں کیا ہوا وہ حوصلۂ دید اہلِ دل
دیکھو نا وہ نقاب اٹھائے ہوئے تو ہیں

تیرے گناہگار، گنہ گار ہی سہی
تیرے کرم کی آس لگائے ہوئے تو ہیں

یوں تجھ کو اختیار ہے تاثیر دے نہ دے
دستِ دعا ہم آج اٹھائے ہوئے تو ہیں

ذکر ان کا گر زباں پہ نہیں ہے تو کیا ہوا
اب تک نفس نفس میں سمائے ہوئے تو ہیں

مٹتے ہوؤں کو دیکھ کے کیوں رو نہ دیں مجازؔ
آخر کسی کے ہم بھی مٹائے ہوئے تو ہیں

۱۹۳۲ء

ग़ज़ल

सीने में उनके जलवे छुपाये हुए तो हैं
हम अपने दिल को-तूर[1] बनाए हुए तो हैं

तासीर जज़्ब-ए-शौक़ दिखाये हुए तो हैं
हम तेरा हर हिजाब[2] उठाये हुये तो हैं

हाँ क्या हुआ वह हौसला-ए-दीद[3] अहल-ए-दिल
देखो ना वह नक़ाब उठाये हुए तो हैं

तेरे गुनहगार—गुनहगार ही सही
तेरे करम की आस लगाये हुए तो हैं

यूँ तुझको इख़्त्यार है तासीर दे न दे
दसत-ए-दुआ[4] हम आज उठाये हुए तो हैं

ज़िक्र उनका गर ज़बाँ पे नहीं है तो क्या हुआ
अब तक नफ़स-नफ़स में समाये हुए तो हैं

मिटते हुओं को देख के क्यूँ रो न दे 'मजाज़'
आख़िर किसी के हम भी मिटाये हुए तो हैं

1932

□

---

1. पहाड़ का नाम 2. पर्दा 3. देखने का शौक़ 4. दुआ के लिये हाथ उठाना।

غزل

عیش سے بے نیاز ہیں ہم لوگ
بے خودِ سوز و ساز ہیں ہم لوگ

جس طرح چاہے چھیڑ دے ہم کو
تیرے ہاتھوں میں ساز ہیں ہم لوگ

بے سبب التفات کیا معنی
کچھ تو اے چشمِ ناز ہیں ہم لوگ

محفلِ سوز و ساز ہے دنیا
حاصلِ سوز و ساز ہیں ہم لوگ

کوئی اس راز سے نہیں واقف
کیوں سراپا نیاز ہیں ہم لوگ

ہم کو رسوا نہ کر زمانے میں
بسکہ تیرا ہی راز ہیں ہم لوگ

سب اسی عشق کے کرشمے ہیں
ورنہ کیا اے مجاز ہیں ہم لوگ

۱۹۳۲ء
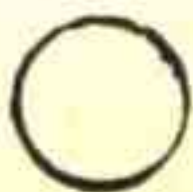
ग़ज़ल

ऐश से बे-नियाज़ हैं हम लोग
बे-ख़ुद-ए-सोज-ओ-साज़ हैं हम लोग

जिस तरह चाहे छेड़ दे हमको
तेरे हाथों में साज़ हैं हम लोग

बे-सबब इलतेफ़ात[1] क्या मानी
कुछ तो ऐ चश्म-ए-नाज़ हैं हम लोग

महफ़िल-ए-सोज़-ओ-साज़ है दुनिया
हौसिल-ए-सोज़-ओ-साज़ हैं हम लोग

कोई इस राज़ से नहीं वाक़िफ़
क्यूँ सरापा-न्याज़[2] हैं हम लोग

हमको रुसवा[3] न कर ज़माने में
बस कि तेरा ही राज़ हैं हम लोग

सब इसी इश्क़ के करिश्मे हैं
वरना क्या ऐ 'मजाज़' हैं, हम लोग

1933

□

---

1. मुहब्बत होना और ख्याल करना 2. सर से पैर तक मुहब्बत में डूबे हुए 3. शर्मिन्दा।

نظم

دیکھتا جذبِ محبّت کا اثر آج کی رات
میرے شانے پہ ہے اُس شوخ کا سر آج کی رات
اور کیا چاہیئے اب اے دلِ مجروح تجھے!
اُس نے دیکھا تو بہ اندازِ دگر آج کی رات
پھول کیا خار بھی ہیں آج گلستاں بکنار
سنگریزے ہیں نگاہوں میں گہر آج کی رات
نور ہی نور ہے کس سمت اٹھاؤں آنکھیں
حُسن ہی حُسن ہے تا حدِّ نظر آج کی رات
نرگسِ ناز میں وہ نیند کا ہلکا سا خمار!
وہ مرے نغمۂ شیریں کا اثر آج کی رات
نغمۂ و مے کا یہ طوفانِ طرب کیا کہیئے!
گھر مرا بن گیا خیّام کا گھر آج کی رات
اُن کے الطاف کا اتنا ہی فسوں کافی ہے
کم ہے پہلے سے بہت دردِ جگر آج کی رات

۱۹۳۳ء
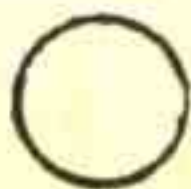
नज़्म

देखना जज़्बे मुहब्बत का असर आज की रात
मेरे शाने पे है उस शोख़ का सर आज की रात

और क्या चाहिये अब ऐ दिले मजरूह[1] तुझे !
उसने देखा तो बअन्दाज़-ए-दिगर[2] आज की रात

फूल क्या ख़ार भी हैं आज गुलिसतां बकिनार
संगरेज़े हैं निगाहों में गुहर[3] आज की रात

नूर ही नूर है किस सम्त[3] उठाऊँ आंखें
हुस्न ही हुस्न है ता हद-ए-नज़र आज की रात

नरगिस-ए-नाज़ में वह नीन्द का हल्का-सा ख़ुमार
वह मेरे नग़मा-ए-शीरीं का असर आज की रात

नग़मा-ओ-मय का यह तूफ़ान-ए-तरब क्या कहिये !
घर मेरा बन गया ख़य्याम का घर आज की रात

उनके अलताफ़ का इतना ही फ़ुसूं[1] काफ़ी है
कम है पहले से बहुत दर्द-ए-जिगर आज की रात !

1933

□

---

1. ज़ख़्मी 2. दूसरे तरीक़े से 3. मोती 4. जादू ।

غزل

خود دل میں رہ کے آنکھ سے پردا کرے کوئی
ہاں لُطف جب ہے پا کے بھی ڈھونڈا کرے کوئی

تم نے تو حُکم ترکِ تمنّا سنا دیا
کِس دل سے آہ ترکِ تمنّا کرے کوئی

دنیا لرز گئی دلِ حرماں نصیب کی!
اس طرح سازِ عیش نہ چھیڑا کرے کوئی

مجھ کو یہ آرزو وہ اُٹھائیں نقاب خود
اُن کو یہ انتظار تقاضا کرے کوئی

رنگینیٔ نقاب میں گُم ہو گئی نظر
کیا بے حجابیوں کا تقاضا کرے کوئی

یا تو کسی کو جراُتِ دیدار ہی نہ ہو
یا پھر مری نگاہ سے دیکھا کرے کوئی

ہوتی ہے اِس میں حُسن کی توہین اے مجاز
اتنا نہ اہلِ عشق کو رسوا کرے کوئی

۱۹۳۲ء
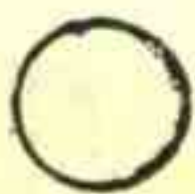
ग़ज़ल

ख़ुद दिल में रह के आँख से पर्दा करे कोई
हां लुत्फ़ जब है पाके भी ढूँढ़ा करे कोई

तुमने तो हुक्म-ए-तर्क-ए-तमन्ना सुना दिया
किस दिल से आह तर्क-ए-तमन्ना करे कोई

दुनिया लरज़ गई दिल-ए-हिरमाँ-नसीब[1] की
इस तरह साज़-ए-ऐश न छेड़ा करे कोई

मुझको यह आरज़ू वह उठायें नक़ाब ख़ुद
उनको यह इन्तेज़ार तक़ाज़ा करे कोई

रंगीनी-ए-नक़ाब में ग़ुम हो गई नज़र
क्या बे-हिजाबियों[2] का तक़ाज़ा करे कोई

या तो किसी को जुरअत-ए-दीदार ही न हो
या फिर मेरी निगाह से देखा करे कोई

होती है इसमें हुस्न की तौहीन ऐ 'मजाज़'
इतना न अहल-ए-इश्क़ को रुसवा[3] करे कोई।

1933

□

---

1. क़िस्मत के मारे हुए 2. बेपर्दगी 3. बदनाम।

شوقِ گریزاں

دیر و کعبہ کا میں نہیں قائل
دیر و کعبہ کو آستاں نہ بنا
مجھ میں تو روحِ سرمدی مت پھونک
رونقِ بزمِ عارفاں نہ بنا
میری خودداریوں کا خون نہ کر
مطربِ بزمِ دلبراں نہ بنا
ماہ و انجم سے مجھ کو کیا نسبت
مجھ کو ان کا مزاجداں نہ بنا
جس کو اپنی خبر نہیں رہتی
اس کو سالارِ کارواں نہ بنا
اس زمیں کو زمیں ہی رہنے دے
اس زمیں کو تو آسماں نہ بنا
راز تیرا چھپا نہیں سکتا
تو مجھے اپنا رازداں نہ بنا

۱۹۳۴ء
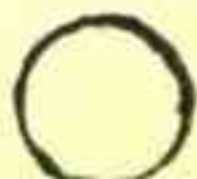
शौक़-ए-गुरेज़ाँ

दैर-ओ-काबा का मैं नहीं क़ायल
दैर-ओ-काबा को आसताँ न बना

मुझ में तू रूह-ए-सरमदी मत फूँक
रौनक-ए-बज़्म[1]-ए-अरिफाँ[2] न बना

मेरी ख़ुद्दारियों का ख़ून न कर
मतरब-ए-बज़्म-ए-दिलबराँ न बना

माह-ओ-अन्जुम से मुझको क्या निसबत
मुझको इनका मिज़ाजदाँ न बना

जिसको अपनी खबर नहीं रहती
उसको सालार-ए-कारवाँ न बना

इस ज़मीं को ज़मीं ही रहने दे
इस ज़मीं को तू आसमाँ न बना

राज़ तेरा छुपा नहीं सकता
तू मुझे अपना राज़दाँ न बना।

1934

□

---

1. महफ़िल 2. अल्लावाले 3. गीतों की महफ़िल।

غزل

کچھ تجھ کو خبر ہے ہم کیا کیا، اَے شورشِ دوراں بھول گئے
وہ زلفِ پریشاں بھول گئے، وہ دیدۂ گریاں بھول گئے

اَے شوقِ نظارہ کیا کہیے، نظروں میں کوئی صورت ہی نہیں
اَے ذوقِ تصور کیا کیجیے، ہم صورتِ جاناں بھول گئے

اب گُل سے نظر ملتی ہی نہیں، اب دل کی کلی کھلتی ہی نہیں
اے فصلِ بہاراں رخصت ہو، ہم لطفِ بہاراں بھول گئے

سب کا تو مداوا کر ڈالا، اپنا ہی مداوا کر نہ سکے
سب کے تو گریباں سی ڈالے، اپنا ہی گریباں بھول گئے

یہ اپنی وفا کا عالم ہے، اب اُن کی جفا کو کیا کہیے
اک نشترِ زہر آگیں رکھ کر نزدیکِ رگِ جاں بھول گئے

۱۹۳۴ء

ग़ज़ल

कुछ तुझको ख़बर है हम क्या-क्या ऐ शोरिश-ए-दौरां[1]
भूल गए
वह ज़ुल्फ़-ए-परीशां भूल गये, वह दीदा-ए-गिरयां[2] भूल गए

ऐ शौक-ए-नज़ारा क्या कहिये, नज़रों में कोई सूरत ही नहीं
ऐ ज़ौक़-ए-तसव्वर क्या कीजिये,हम सूरत-ए-जानां[3] भूल गएँ

अब गुल से नज़र मिलती ही नहीं, अब दिल की कली
खिलती ही नहीं
ऐ फ़सल-ए-बहारां रुख़सत हो, हम लुत्फ़-ए-बहारां भूल गए

सब-का तो मदावा[4] कर डाला अपना ही मदावा कर न सके
सब के तो गरीबां सी डाले, अपना ही गरीबां भूल गए

यह अपनी वफ़ा का आलम है, अब उनकी जफ़ा को
क्या कहिये
एक नश्तर ज़हर-आगीं[5] रखकर, नजदीक-ए-रग-ए-जां
भूल गये

1934

□

1. ज़माने की बेचैनी और तक़ाज़ा 2. रोने वाली आँखें 3. महबूब की सूरत 4. इलाज 5. ज़हर से भरा हुआ।

جشنِ سالگرہ

اک مجمعِ رنگیں میں وہ گھبرائی ہوئی سی
بیٹھی ہے عجب ناز سے شرمائی ہوئی سی
آنکھوں میں حیا لب پہ ہنسی آئی ہوئی سی

لہریں سی وہ لیتا ہوا اک پھول کا سہرا
سہرے میں چمکتا ہوا اک چاند سا چہرا
اک رنگ سا رُخ پر کبھی ہلکا کبھی گہرا

سرشارِ نگاہوں میں حیا جھوم رہی ہے
ہیں رقص میں افلاک زمیں گھوم رہی ہے
شاعر کی وفا بڑھ کے قدم چوم رہی ہے

اے تو کہ ترے دم سے مری زمزمہ خوانی
ہو تجھ کو مبارک یہ تری نورِ جہانی
افکار سے محفوظ رہے تیری جوانی

چھلکے تری آنکھوں سے شراب اور زیادہ
مہکیں ترے عارض کے گلاب اور زیادہ
اللہ کرے زورِ شباب اور زیادہ

۱۹۳۵ء

जश्न-ए-सालगिरह

इक मजमा-ए-रंगी में वह घबराई हुई सी
बैठी है अजब नाज़ से शर्माई हुई सी
आँखों में हया लब पे हँसी आई हुई सी

लहरें सी वह लेता हुआ एक फूल सा सेहरा
सेहरे में झमकता हुआ इक चाँद सा चेहरा
इक रंग-सा रुख पर कभी हल्का कभी गहरा

सरशार निगाहों में हया झूम रही है
हैं रक्स में अफ़लाक ज़मीं घूम रही है
शायर की वफ़ा बढ़ के क़दम चूम रही है

ऐ तू कि तेरे दम से मेरी ज़मज़मा[1] ख्वानी
हो तुझको मुबारक यह तेरी नूर-जहानी
अफ़कार[2] से महफ़ूज़ रहे तेरी जवानी

छलके तेरी आँखों से शराब और ज़्यादा
महकें तेरे आरिज़[3] के गुलाब और ज़्यादा
अल्लाह करे ज़ोर-ए-शबाब और ज़्यादा !

1935

□

---

1. शेरो-शायरी 2. दुनिया की चिन्ताएँ 3. गाल।

خانہ بدوش

بستی سے تھوڑی دور چٹانوں کے درمیاں
ٹھہرا ہوا ہے خانہ بدوشوں کا کارواں
اُن کی کہیں زمین نہ اُن کا کہیں مکاں
پھرتے ہیں یونہی شام و سحر زیرِ آسماں
دھوپ اور ابرِ باد کے مارے ہوئے غریب
یہ وہ ہیں لوگ جن کو غلامی نہیں نصیب
اس کارواں میں طفل بھی ہیں نوجواں بھی ہیں
بوڑھے بھی ہیں، مریض بھی ہیں، ناتواں بھی ہیں
میلے پھٹے لباس میں کچھ دیویاں بھی ہیں
سب زندگی سے تنگ بھی ہیں سرگراں بھی ہیں
بیزار زندگی سے ہیں پیر و جواں سبھی
الطافِ شہریار کے ہیں نوحہ خواں سبھی

ख़ानाबदोश

बस्ती से थोड़ी दूर चट्टानों के दरमियाँ
ठहरा हुआ है ख़ाना बदोशों का कारवाँ

उनकी कहीं ज़मीन न उनका कहीं मकाँ
फिरते हैं यूँ ही शाम-ओ-सहर जेर-ए-आसमाँ

धूप और अब्र-ए-बाद के मारे हुए ग़रीब
यह वह हैं लोग जिनको ग़ुलामी नहीं नसीब

इस कारवाँ में तिफ़्ल भी हैं नौजवाँ भी हैं
बूढ़े भी हैं, मरीज भी हैं, नातवाँ[1] भी हैं

मैले फटे लिबास में कुछ देवियाँ भी हैं
सब ज़िन्दगी से तंग भी हैं, सरगराँ[2] भी हैं

बेज़ार ज़िन्दगी से हैं पी-ओ[3] जवाँ सभी
अलताफ़-ए-शहरयार के हैं, नौहा-ख़्वाँ[4] सभी

□

1, कमज़ोर 2. काम में लगे हुए 3. बूढ़े लोग 4. गीत ग़म के गाने वाले।

نذرِ دل

(ان کے نام)

اپنے دل کو دونوں عالم سے اٹھا سکتا ہوں میں
کیا سمجھتی ہو کہ تم کو بھی بھلا سکتا ہوں میں

کون تم سے چھین سکتا ہے مجھے کیا وہم ہے
خود زلیخا سے بھی تو دامن بچا سکتا ہوں میں

دل میں تم پیدا کرو پہلے مری سی جرأتیں
اور پھر دیکھو کہ تم کو کیا بنا سکتا ہوں میں

دفن کر سکتا ہوں سینے میں تمہارے راز کو
اور تم چاہو تو افسانہ بنا سکتا ہوں میں

تم سمجھتی ہو کہ ہیں پردے بہت سے درمیاں
میں یہ کہتا ہوں کہ ہر پردہ اٹھا سکتا ہوں میں

تم کہ بن سکتی ہو ہر محفل میں فردوسِ نظر
مجھ کو یہ دعویٰ کہ ہر محفل پہ چھا سکتا ہوں میں

آؤ مل کر انقلاب تازہ تر پیدا کریں!
دہر پر اس طرح چھا جائیں کہ سب دیکھا کریں

۱۹۳۶ء
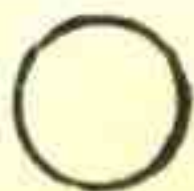
नज़र-ए-दिल

(उनके नाम)

अपने दिल को दोनों आलम से उठा सकता हूँ मैं
क्या समझती हो कि तुमको भी भुला सकता हूँ मैं

कौन तुमसे छीन सकता है, मुझे क्या वहम है
ख़ुद ज़ुलैखा[1] से भी तो दामन बचा सकता हूँ मैं

दिल में तुम पैदा करो पहले मेरी सी जुरअतें[2]
और फिर देखो कि तुमको क्या बना सकता हूँ मैं

दफ़्न कर सकता हूँ सीने में, तुम्हारे राज़ को
और तुम चाहो तो अफ़साना बना सकता हूँ मैं

तुम समझती हो कि हैं पर्दे बहुत से दरमियाँ
मैं यह कहता हूँ कि हर पर्दा उठा सकता हूँ मैं

तुम कि बन सकती हो हर महफ़िल में फ़िरदौस-ए-नज़र[3]
मुझको यह दवा कि हर महफ़िल पे छा सकता हूँ मैं

आओ मिलकर इनक़लाब-ए-ताजा तर[3] पैदा करें !
दहर[4] पर इस तरह छा जाएँ कि सब देखा करें

1936

□

---

1. मिस्र की एक अति सुन्दर स्त्री का नाम 2. हौसलामन्दी
3. निगाहों की जन्नत 4. बिलकुल नया 5. ज़माना।

نظم

مہوشوں کا طرب انگیز تبسم کیا ہے
ہے تو سب کچھ یہ مگر خواب اثر کیوں ہو جائے
حسن کی جلوہ گہہ ناز کا افسوں تسلیم
یہی قربان گہہ اربابِ نظر کیوں ہو جائے

میں نے سوچا تھا کہ دشوار ہے منزل اپنی
اک حسیں بازوئے سیمیں کا سہارا بھی تو ہو
دشتِ ظلمات سے آخر کو گذرنا ہے مجھے
کوئی رخشندہ و تابندہ ستارا بھی تو ہو

آگ کو کس نے گلستاں نہ بنانا چاہا
جل بجھے کتنے خلیلؑ آگ گلستاں نہ بنی
ٹوٹ جانا درِ زنداں کا تو دشوار نہ تھا
خود زلیخا ہی رفیقِ مہِ کنعاں نہ بنی

नज़्म

महविशों[1] का तरब-अंगेज़[2] तबस्सुम क्या है
है तो सब कुछ यह मगर ख़्वाब असर क्यों हो जाए
हुस्न को जलवा गह-ए-नाज़ का अफ़सूँ[3] तसलीम
यही क़ुरबा न गिह-ए-अरबाब-ए-नज़र क्यों हो जाए

मैंने सोचा था कि दुशवार है मंज़िल अपनी
एक हँसी बा-ज़ूए-सीमीं का सहारा भी तो हो
दश्त-ए-ज़ुलमात[4] से आख़िर को गुज़रना है मुझे
कोई रख़शन्दा[5]-ओ-ताबिन्दा सितारा भी तो हो

आग को किसने गुलिसताँ न बनाना चाहा
जल बुझे कितने ख़लील आग गुलिसताँ न बनी
टूट जाना दर-ए-ज़िन्दाँ[6] का तो दुशवार न था
ख़ुद ज़ुलैख़ा[7] ही रफ़ीक़-ए-मह-ए-कनआँ न बनी

□

---

1. ख़ूबसूरत जवान लड़कियाँ 2. मिठास से भरा हुआ 3. जादू 4. अँधेरे के जंगल 5. चमकता हुआ 6. क़ैदख़ाना 7. मिस्र की एक अति सुन्दर स्त्री का नाम।

مجبُوریاں

میں آہیں بھر نہیں سکتا کہ نغمے گا نہیں سکتا
سکوں لیکن مرے دل کو میسر آ نہیں سکتا
کوئی نغمے تو کیا اب مجھ سے میرا ساز بھی لے لے
جو گانا چاہتا ہوں آہ وہ میں گا نہیں سکتا
متاعِ سوز و سازِ زندگی، پیمانہ و بربط
میں خود کو ان کھلونوں سے بھی اب بہلا نہیں سکتا
نہ طوفاں روک سکتے ہیں نہ آندھی روک سکتی ہے
مگر پھر بھی میں اس قصرِ حسیں تک جا نہیں سکتا
وہ مجھ کو چاہتی ہے اور مجھ تک آ نہیں سکتی
میں اُس کو پوجتا ہوں اور اُس کو پا نہیں سکتا
یہ مجبوری سی مجبوری یہ لاچاری سی لاچاری
کہ اُس کے گیت بھی جی کھول کر میں گا نہیں سکتا
حدیں وہ کھینچ رکھی ہیں حرم کے پاسبانوں نے
کہ بن مجرم بنے پیغام بھی پہنچا نہیں سکتا

۱۹۳۶ء

मजबूरियाँ

मैं आहें भर नहीं सकता कि नग़में गा नहीं सकता
सुकूं लेकिन मेरे दिल को मयस्सर आ नहीं सकता

कोई नग़में[1] तो क्या अब मुझ से मेरा साज़ भी ले ले
जो गाना चाहता हूँ आह वह मैं गा नहीं सकता

मता-ए-[2]-सोज़-ओ-साज़-ए-ज़िन्दगी पैमाना-ओ-बरबत
मैं ख़ुद को इन खिलौनों से भी अब बहला नहीं सकता

न तूफ़ाँ रोक सकते हैं न आन्धी रोक सकती है
मगर फिर भी मैं इस क़स्र-ए-हँसी[3] तक जा नहीं सकता

वह मुझको चाहती है और मुझ तक आ नहीं सकती
मैं उसको पूजता हूँ और उसको पा नहीं सकता

यह मजबूरी सी मजबूरी यह लाचारी सी लाचारी
कि उसके गीत भी जी खोलकर मैं गा नहीं सकता

हदें वह खेंच रखी हैं हरम के पासबानों[4] ने
कि बिन मुजरिम बने पैग़ाम भी पहुँचा नहीं सकता

1936

□

---

1. गीत 2. दौलत 3, ख़ूबसूरत महल 4. हिफ़ाज़त करने वाले।

نظمِ نورا

وہ نوخیز نورا وہ اِک بنتِ مریم
وہ مخمور آنکھیں وہ گیسوئے پُرخم
وہ اک نرس تھی چارہ گرِ جس کو کہیے
مداوائے دردِ جگر جس کو کہیے
جوانی سے طفلی گلے مِل رہی تھی
ہوا چل رہی تھی، کلی کِھل رہی تھی

وہ پُر رعب تیور، وہ شاداب چہرہ
متاعِ جوانی پہ فطرت کا پہرہ
سفید اور شفاف کپڑے پہن کر
مرے پاس آتی تھی اک حور بن کر
دوا اپنے ہاتھوں سے مجھ کو پلاتی
"اب اچھے ہو" ہر روز مژدہ سُناتی
نہیں جانتی ہے مِرا نام تک وہ
مگر بھیج دیتی ہے پیغام تک وہ
یہ پیغام آتے ہی رہتے ہیں اکثر
کہ کس روز آؤ گے بیمار ہو کر

۱۹۳۶ء

नज़्म-ए-नूरा

वह नौख़ेज़ नूरा वह इक बिन्त-ए-मरयम[1]
वह मख़मूर आँखें वह गेसू-ए-पुर ख़म[2]

वह इक नर्स थी चारागर जिसको कहिये
मदावा-ए-दर्द-ए-जिगर जिसको कहिये

जवानी से तिफ़ली[3] गले मिल रही थी
हवा चल रही थी, कली खिल रही थी

वह पुर रोब तेवर वह शादाब चेहरा
माताए जवानी[4] पे फ़ितरत का पहरा

सफ़ेद और शफ़्फ़ाक़ कपड़े पहनकर
मेरे पास आती थी एक हूर बनकर

दवा अपने हाथों से मुझको पिलाती
"अब अच्छे हो" हर रोज़ मुज़दा[5] सुनाती

नहीं जानती है मेरा नाम तक वह
मगर भेज देती है पैग़ाम तक वह

यह पैग़ाम आते ही रहते हैं अक्सर
कि किस रोज़ आओगे बीमार होकर

1936

□

1. मरयम की बेटी 2. घुंघराले बाल 4. बचपन 3. जवानी की दौलत 5. समाचार।

نذرِ علیگڈھ

سرشارِ نگاہِ نرگس ہوں، پابستۂ گیسوئے سُنبل ہوں
یہ میرا چمن ہے میرا چمن، میں اپنے چمن کا بلبل ہوں
ہر آن یہاں صہبائے کہن اِک ساغرِ نو میں ڈھلتی ہے
کلیوں سے حُسن ٹپکتا ہے پھولوں سے جوانی اُبلتی ہے
جو طاقِ حرم میں روشن ہے وہ شمع یہاں بھی جلتی ہے
اِس دشت کے گوشے گوشے سے اِک جوئے حیات اُبلتی ہے
اِسلام کے اس بُت خانے میں اصنام بھی ہیں اور آذر بھی
تہذیب کے اِس میخانے میں شمشیر بھی ہے اور ساغر بھی
یاں حُسن کی بَرق چمکتی ہے، یاں نور کی بارش ہوتی ہے
ہر آہ یہاں اک نغمہ ہے ہر اشک یہاں اک موتی ہے
ہر شام ہے شامِ مصر یہاں، ہر شب ہے شبِ شیراز یہاں
ہے سارے جہاں کا سوز یہاں اور سارے جہاں کا ساز یہاں
یہ دشتِ جنوں دیوانوں کا، یہ بزمِ وفا پروانوں کی
یہ شہرِ طرب رومانوں کا، یہ خلدِ بریں ارمانوں کی

नज़र-ए-अलीगढ़

सरशार निगाह-ए-नरगिस[1] हूँ, पाबसता[2]-ए-गेसू-ए-सुंबुल हूँ
यह मेरा चमन है मेरा चमन मैं अपने चमन का बुलबुल हूँ

हर आन यहाँ सहबा-ए-कुहन[3] एक सागर-ए-नौ में ढलती है
कलियों से हुस्न टपकता है फूलों से जवानी उबलती है
जो ताक़-ए-हरम में रौशन है वह शमा यहाँ भी जलती है
इस दश्त[4] के गोशे-गोशे[5] से एक जू-ए-हयात[6] उबलती है

इस्लाम के इस बुतख़ाने में असनाम भी हैं और आज़ार भी
तहज़ीब के इस मयख़ाने में, शमशीर भी है और सागर भी

याँ हुस्न की बर्क़ चमकती है, याँ नूर की बारिश होती है
हर आह यहाँ इक नग़मा है, हर अश्क यहाँ इक मोती है

हर शाम है शाम-ए-मिस्र यहाँ, हर शब है शब-ए-शीराज़ यहाँ
है सारे जहाँ का सोज़ यहाँ और सारे जहाँ का साज़ यहाँ

यह दश्त-ए-जुनूँ दीवानों का, यह बज्म-ए-वफा परवानों की
यह शहर तरब रूमानों का, यह खुलदा-ए-बरीं अरमानों की

□

---

1. नरगिस की आँखों में डूबा हुआ 2. पैरों में बेड़ियाँ 3. पुरानी शराब 4. जंगल 5. कोने-कोने में 6. जिन्दगी।

بربطِ شکستہ

اُس نے جب مجھ سے کہا گیت اک سُنا دو نا
سرد ہے فضا دل کی، آگ تم لگا دو نا
کیا حسین تیور تھے، کیا لطیف لہجہ تھا
آرزو تھی، حسرت تھی، حکم تھا، تقاضا تھا
گنگنا کے مستی میں ساز لے لیا میں نے
چھیڑ ہی دیا آخر نغمۂ وفا میں نے
یاس کا دھواں اٹھا ہر نوائے خستہ سے
آہ کی صدا نکلی بربطِ شکستہ سے

۱۹۳۷ء
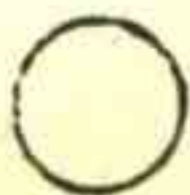
बरबत-ए-शिकसता

उसने जब मुझ से कहा गीत इक सुना दो ना
सर्द है फ़िज़ा[1] दिल की, आग तुम लगा दो ना

क्या हसीन तेवर थे, क्या लतीफ़[2] लहजा था
आरज़ू थी, हसरत थी, हुक्म था, तक़ाज़ा था

गुनगुना के मसती में साज़ ले लिया मैंने
छेड़ ही दिया आख़िर नग़म-ए-वफ़ा मैंने

यास का धुआं उठा हर नवा-ए-खसता[3] से
आह की सदा निकली बरबत-ए-शिकसता से[4]

1937

□

1. हालत 2. अच्छा 3. टूटी हुई आवाज 4. टूटा हुआ बाजा।

مُسافِر

مُسافر یونہی گیت گائے چلا جا — سرِ رہگزر کچھ سُنائے چلا جا
تری زندگی سوز و سازِ محبّت — ہنسائے چلا جا رُلائے چلا جا
ترے زمزمے ہیں خنک بھی تپاں بھی — لگائے چلا جا بجھائے چلا جا
کوئی لاکھ روکے کوئی لاکھ ٹوکے — قدم اپنے آگے بڑھائے چلا جا
حسیں بھی تجھے راستے میں ملیں گے — نظر مت ملا، مسکرائے چلا جا
محبّت کے نقشے تمنّا کے خاکے — بنائے چلا جا، مٹائے چلا جا
قدامت حدیں کھینچتی ہی رہے گی — قدامت کی بنیاد ڈھائے چلا جا
قسم شوق کی فطرتِ مضطرب کی — یونہی نت نئی دھن میں گائے چلا جا

جو پرچم اٹھا ہی لیا سرکشی کا!
اسے آسماں تک اڑائے چلا جا

۱۹۳۷ء

मुसाफ़िर

मुसाफ़िर यूँही गीत गाए चला जा
सर-ए-रहगुज़र[1] कुछ सुनाए चला जा

तेरीज़िन्दगीसोज़-ओ-साज़-ए-मुहब्बत
हँसाए चला जा रुलाए चला जा

तेरे ज़मज़मे हैं ख़ुनक भी तपाँ भी
लगाए चला जा बुझाए चला जा

कोई लाख रोके कोई लाख टोके
क़दम अपने आगे बढ़ाए चला जा

हँसीं भी तुझे रास्ते में मिलेंगे
नज़र मत मिला मुस्कुराए चला जा

मुहब्बत के नक़्शे तमन्ना के ख़ाके
बनाए चला जा मिटाए चला जा

क़दामत[2] हदें खेंचती ही रहेगी
क़दामत की बुनियाद ढाए चला जा

क़सम शौक़ की फ़ितरत-ए-मुज़तरब की
यूँही नित नई धुन में गाए चला जा

जो परचम उठा ही लिया सरकशी का
उसे आसमाँ तक उठाए चला जा

1937

□

---

1. रास्ता चलते 2. पुराने ख्यालात।

غزل

برباد تمنّا پہ عتاب اور زیادہ
ہاں میری محبت کا جواب اور زیادہ

روئیں نہ ابھی اہلِ نظر حال پہ میرے
ہونا ہے ابھی مجھ کو خراب اور زیادہ

"آوارہ و مجنوں" ہی پہ موقوف نہیں کچھ
ملنے ہیں ابھی مجھ کو خطاب اور زیادہ

اُٹھیں گے ابھی اور بھی طوفاں مرے دل سے
دیکھوں گا ابھی عشق کے خواب اور زیادہ

ٹپکے گا لہو اور مرے دیدۂ تر سے
دھڑکے گا دلِ خانہ خراب اور زیادہ

ہوگی مری باتوں سے انہیں اور بھی حیرت
آئیگا انھیں مجھ سے حجاب اور زیادہ

اے مطربِ بیباک کوئی اور بھی نغمہ
اے ساقیٔ فیّاض شراب اور زیادہ

۱۹۳۸ء
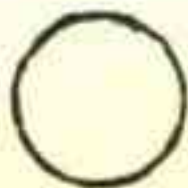
ग़ज़ल

बरबाद तमन्ना पे अताब[1] और ज़्यादा
हाँ मेरी मुहब्बत का जवाब और ज़्यादा

रोएँ न अभी अहल-ए-नज़र हाल पे मेरे
होना है अभी मुझको खराब और ज़्यादा

आवारा-व-मजनूँ ही पे मौक़ूफ़[2] नहीं कुछ
मिलने हैं अभी मुझको ख़िताब और ज़्यादा

उठेंगे अभी और भी तूफ़ाँ मेरे दिल से
देखूँगा अभी इश्क़ के ख्वाब और ज़्यादा

टपकेगा लहू और मेरे दीदा-ए-तर से
धड़केगा दिल-ए-खाना ख़राब और ज़्यादा

होगी मेरी बातों से उन्हें और भी हैरत
आएगा उन्हें मुझसे हिजाब[3] और ज़्यादा

ऐ मुतिरब-ए-बेबाक[4] कोई और भी नग़मा
ऐ साक़ी-ए-फ़य्याज़[5] शराब और ज़्यादा

1938

□

---

1. गुस्सा 2. मुनहसर 3. पर्दा 4. बिना झिझक गानेवाला
5. दिलवाला साक़ी ।

گریز

یہ جاکر کوئی بزمِ خوباں میں کہہ دو!
کہ اب درخورِ بزمِ خوباں نہیں میں
مبارک تمہیں قصر و ایواں تمہارے
وہ دلدادۂ قصر و ایواں نہیں میں
جوانی بھی سرکش، محبت بھی سرکش
وہ زندانیٔ زلفِ پیچاں نہیں میں
تڑپ میری فطرت، تڑپتا ہوں لیکن
وہ زخمیٔ پیکانِ مژگاں نہیں میں
دھڑکتا ہے دل اب بھی راتوں کو لیکن
وہ نوحہ گرِ دردِ ہجراں نہیں میں
بایں تشنہ کامی، بایں تلخ کامی
رہینِ لبِ شکرافشاں نہیں میں
شراب و شبستاں کا مارا ہوں لیکن
وہ غرقِ شراب و شبستاں نہیں میں
قسم نطق کی شعلہ افشانیوں کی
کہ شاعر تو ہوں، اب غزلخواں نہیں میں

۱۹۴۰ء

गुरेज़

यह जाकर कोई बज़्म-ए-ख़ूबाँ[1] में कह दो
कि अब दर-ख़ूर-ए-बज़्म-ए-ख़ूबाँ[2] नहीं मैं

मुबारक तुम्हें क़सर-ओ-ऐवाँ तुम्हारे
वह दिलदादा-ए-क़स-ओ-ऐवाँ नहीं मैं

जवानी भी सरकश, मुहब्बत भी सरकश
वह ज़िनदानी-ए-ज़ुलफ़-ए-पेचाँ नहीं मैं

तड़प मेरी फ़ितरत, तड़पता हूँ लेकिन
वह ज़खमी-ए-पैमान-ए-मिज़गाँ नहीं मैं

धड़कता है दिल अब भी रातों को लेकिन
वह नौहा गर-ए-दर्द-ए-हिजराँ नहीं मैं

बई तिशनाकामी[3], बई तल्खकामी[4]
रहीन-ए-लब-ए-शकर अफ़शाँ नहीं मैं

शराब-ओ-शबिस्ताँ का मारा हूँ लेकिन
वह ग़रक़ शराब-ओ-शबिस्ताँ नहीं मैं

क़सम नुत्क़ की शोला अफ़शानियों की
कि शायर तो हूँ, अब ग़ज़लख्वाँ नहीं मैं

1940

□

---

1. महबूब की महफ़िल 2. महबूब के दर का भिखारी 3. प्यास
4. कड़ुआ नाकाम तजुर्बा 5. मिठास का आदि ।

حُسن و عشق

مجھ سے مت پوچھ "مرے حُسن میں کیا رکھا ہے"
آنکھ سے پردۂ ظلمات اٹھا رکھا ہے
میری دنیا کہ مرے غم سے جہنّم بردوش
تو نے دنیا کو ابھی فردوس بنا رکھا ہے

مجھ سے مت پوچھ "ترے عشق میں کیا رکھا ہے"
سوز کو ساز کے پردے میں چھپا رکھا ہے
جگمگا اٹھتی ہے دنیائے تخیّل جس سے
دل میں وہ شعلۂ جانسوز دبا رکھا ہے

۱۹۴۰ء

हुस्न-ओ-इश्क़

मुझसे मत पूछ मेरे हुस्न में क्या रखा है
आंख से पर्दा-ए-ज़ुलमात[1] उठा रखा है

मेरी दुनिया कि मेरे ग़म से जहन्नुम बरदोश[2]
तूने दुनिया को भी फ़िरदौस बना रखा है

मुझसे मत पूछ तेरे इश्क में क्या रखा है
सोज़[3] को साज़[4] के पर्दे में छिपा रखा है

जगमगा उठती है दुनिया-ए-तख़य्युल[5] जिससे
दिल में वह शोला-ए-जांसोज़[6] दबा रखा है

1946

□

---

1. अंधेरे 2. कान्धे पर 3. जलन 4. गीत 5. ख़्याल 6. दिल की जलन।

ایک غمگین یاد

مرے پہلو بہ پہلو جب وہ چلتی تھی گلستاں میں
فرازِ آسماں پر کہکشاں حسرت سے تکتی تھی
محبّت جب چمک اٹھتی تھی اُسکی چشمِ خنداں میں
خمستانِ فلک سے نور کی صہبا چھلکتی تھی

مرے بازو پہ جب وُہ زلفِ شبگوں کھول دیتی تھی
زمانہ نکہتِ خُلدِ بریں میں ڈوب جاتا تھا
مرے شانہ پہ جب سر رکھ کے ٹھنڈی سانس لیتی تھی
مری دنیا میں سوز و ساز کا طوفان آتا تھا

وہ میرا شعر جب میری ہی لَے میں گُنگُناتی تھی
مناظر جھومتے تھے بام و در کو وجد آتا تھا
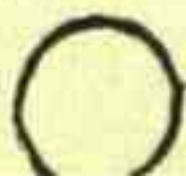
एक ग़मगीन याद

मेरे पहलू-ब-पहलू[1] जब वह चलती थी गुलिसतां में
फराज[2]-ए-आसमाँ पर कहकशाँ हसरत से तकती थी

मुहब्बत जब चमक उठती थी इसकी चश्म-ए-खन्दाँ[3] में
खमिसतान-ए-फ़लक से नूर की सहब छलकती[4] थी

मेरे बाज़ू पे जब वह जुल्फ़-ए-शबगूँ[5] खोल देती थी
ज़माना निकहत-ए-खुलद-ए-बरीं में डूब जाता था

मेरे शाने पे जब सर रख के ठंडी साँस लेती थी
मेरी दुनियाँ में सोज़-ओ-साज़ का तूफान आता था

वह मेरा शेर जब मेरी ही लै में गुनगुनाती थी
मनाजिर झूमते थे बाम-ओ-दर को वज्द[6] आता था

□

---

1. साथ-साथ 2. बुलन्दी 3. हंसती आँखें 4. रोशनी
5. सियाह, काले 6. झूमना।

غزل

اِذنِ خرام لیتے ہوئے آسماں سے ہم
ہٹ کر چلے ہیں رہگذرِ کارواں سے ہم

کیا پوچھتے ہو جھومتے آئے کہاں سے ہم
پی کر اٹھے ہیں خمکدۂ آسماں سے ہم

کیوں کر ہوا ہے فاش زمانہ پہ کیا کہیں
وہ رازِ دل جو کہہ نہ سکے رازداں سے ہم

ہمدم یہی ہے رہگذرِ یارِ خوش خرام
گذرے ہیں لاکھ بار اسی کہکشاں سے ہم

کیا کیا ہوا ہے ہم سے جنوں میں نہ پوچھیے
الجھے کبھی زمیں سے کبھی آسماں سے ہم

بخشی ہیں ہم کو عشق نے وہ جرأتیں مجاز
ڈرتے نہیں سیاستِ اہلِ جہاں سے ہم

۱۹۴۱ء
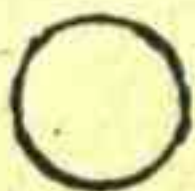
ग़ज़ल

इज़्न-ए-ख़राम[1] लेते हुए आसमाँ से हम
हटकर चले हैं रहगुज़र-ए-कारवाँ से हम

क्या पूछते हो झूमते आए कहाँ से हम
पीकर उठे हैं ख़ुमकदा[2]-ए-आसमाँ से हम

क्यूँ कर हुआ है फ़ाश ज़माने पे क्या कहें
वह राज़-ए-दिल जो कह न सके राज़दाँ से हम

हमदम यही है रहगुज़र-ए-यार-ए-ख़ुश-ख़राम[3]
गुज़रे हैं लाख बार इसी कहकशाँ से हम

क्या-क्या हुआ है हमसे जुनूँ में न पूछिये
उलझे कभी ज़मीं से कभी आसमाँ से हम

बख़्शी है हमको इश्क़ ने वह जुरअत-ए-'मजाज़'
डरते नहीं सियासत-ए-अहल-ए-जहाँ से हम

1941

□

---

1. चलने की इजाज़त 2. आसमाँ की शराब 3. अच्छी चाल वाला।

غزل

مری وفا کا ترا لطف بھی جواب نہیں
مرے شباب کی قیمت ترا شباب نہیں

یہ ماہتاب نہیں ہے کہ آفتاب نہیں
سبھی ہے حسن، مگر عشق کا جواب نہیں

مری نگاہ میں جلوے ہیں جلوے ہی جلوے
یہاں حجاب نہیں ہے یہاں نقاب نہیں

جنوں بھی حد سے سوا شوق بھی ہے حد سے سوا
یہ بات کیا ہے کہ میں موردِ عتاب نہیں

یہاں تو حسن کا دل بھی ہے غم سے صد پارہ
میں کامیاب نہیں وہ بھی کامیاب نہیں

مجازؔ کس کو میں سمجھاؤں کوئی کیا سمجھے
کہ کامیابِ محبت بھی کامیاب نہیں

سنہ ۱۹۴۳ء
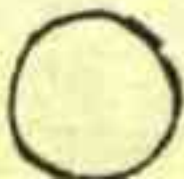
ग़ज़ल

मेरी वफ़ा का तेरा लुत्फ़ भी जवाब नहीं
मेरे शबाब की क़ीमत तेरा शबाब नहीं

यह माहताब नहीं है कि आफ़ताब नहीं
सभी है हुस्न मगर, इश्क़ का जवाब नहीं

मेरी निगाह में जलवे हैं जलवे-ही-जलवे
यहाँ हिजाब नहीं है यहाँ नक़ाब नहीं

जुनूँ भी हद से सिवा शौक भी है हद-से सिवा
यह बात क्या है कि मैं मोरिद-ए-इताब[1] नहीं

यहाँ तो हुस्न का दिल भी है ग़म से सद-पारा[2]
मैं कामयाब नहीं वह भी कामयाब नहीं

'मजाज़' किसको मैं समझाऊँ कोई क्या समझे
कि कामयाब-ए-मुहब्बत भी कामयाब नहीं

1942

□

---

1. सजा का मुसतहक 2. सौ टुकड़ों में।

مجھے جانا ہے اِک دن

مجھے جانا ہے اِک دِن تیری بزمِ ناز سے آخر
ابھی پھر درد ٹپکے گا مری آواز سے آخر
ابھی پھر آگ اٹھے گی شکستہ ساز سے آخر
مجھے جانا ہے اِک دن تیری بزمِ ناز سے آخر

ابھی تو حُسن کے پیروں پہ ہے جبرِ حنا بندی
ابھی ہے عشق پر آئینِ فرسُودہ کی پابندی
ابھی حاوی ہے عقل و روح پر جھوٹی خداوندی
مجھے جانا ہے اِک دن تیری بزمِ ناز سے آخر

ابھی تہذیب عدل و حق کی کشتی کھے نہیں سکتی!
ابھی یہ زندگی دادِ صداقت دے نہیں سکتی!
ابھی انسانیت دولت سے ٹکر لے نہیں سکتی!
مجھے جانا ہے اِک دن تیری بزمِ ناز سے آخر
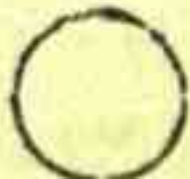
मुझे जाना है इक दिन

मुझे जाना है इक दिन तेरी बज़्म-ए-नाज़ से आखिर
अभी फिर दर्द टपकेगा मेरी आवाज़ से आखिर
अभी फिर आग उठेगी शिकसता-साज़[1] से आखिर

मुझे जाना है इक दिन तेरी बज़्म-ए-नाज़ से आखिर

अभी तो हुस्न के पैरों पे है जब्र-ए-हिना बन्दी
अभी है इश्क़ पर आईन-ए-फ़रसूदा[2] की पाबन्दी
अभी हावी है अक़्ल-ओ-रूह पर झूठी खुदाबन्दी

मुझे जाना है इक दिन तेरी बज़्म-ए-नाज़ से आखिर

अभी तहज़ीब अदल-ओ-हक़ की कश्ती खे नहीं सकती
अभी यह ज़िन्दगी दाद-ए-सदाक़त[3] दे नहीं सकती
अभी इन्सानियत दौलत से टक्कर ले नहीं सकती

मुझे जाना है इक दिन तेरी बज़्म-ए-नाज़ से आखिर

□

---

1. टूटा बाजा 2. पुराना क़ानून 3. सच्चाई की तारीफ़।

غزل

سازگار ہے ہمدم اِن دنوں جہاں اپنا
عشق شادماں اپنا شوق کامراں اپنا

آہِ بے اثر کس کی نالۂ نارسا کس کا
کام بارہا آیا جذبۂ نہاں اپنا

کب کیا تھا اس دل پر حُسن نے کرم اِتنا
مہرباں اور اس درجہ کب تھا آسماں اپنا

اُلجھنوں سے گھبرائے میکدے میں در آئے
کس قدر تن آساں ہے ذوقِ رائیگاں اپنا

کچھ نہ پوچھ اَے ہمدم ان دنوں مِرا عالم
مطرب خسیں اپنا ساقیِ جواں اپنا

عشق اور رسوائی کون سی نئی شے ہے
عشق تو ازل سے تھا رسوائے جہاں اپنا

تم مجازؔ دیوانے مصلحت سے بیگانے
ورنہ ہم بنا لیتے تم کو رازداں اپنا

۱۹۴۵ء
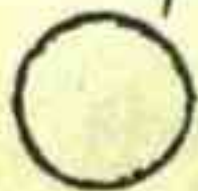
ग़ज़ल

साज़गार है हमदम[1] इन दिनों जहाँ अपना
इश्क़ शादमाँ अपना शौक़ कामराँ[2] अपना

आह-ए-बेअसर किसकी नाला-ए-नारसा किसका
काम बारहा आया जज़्बा-ए-नेहाँ[3] अपना

कब किया था इस दिल पर हुस्न ने करम इतना
महरबाँ और इस दर्जा कब था आसमाँ अपना

उलझनों से घबराए मयकदे में दर आए
किस क़दर तन आसाँ है ज़ौक़-ए-रायगाँ[4] अपना

कुछ न पूछ ऐ हमदम इन दिनों मेरा आलम
मुतरिब-ए-हसीं अपना साक़ी-ए-जवाँ अपना

इश्क़ और रुसवाई कौन-सी नई शै है
इश्क़ तो अज़ल से था रुसवा-ए-जहाँ अपना

तुम 'मजाज़' दीवाने मसलेहत से बेगाने
वरना हम बना लेते तुमको राज़दाँ अपना

1948

□

---

1. साथी 2. कामयाब 3. छिपा हुआ जज़्बा 4. बेकार।

شرارے

خود کو بہلانا تھا آخر خود کو بہلاتا رہا
میں بہ ایں سوزِ دروں ہنستا رہا گاتا رہا

مجھکو احساسِ فریبِ رنگ و بو ہوتا رہا
میں مگر پھر بھی فریبِ رنگ و بو کھاتا رہا

میری دنیائے وفا میں کیا سے کیا ہونے لگا
اک دریچہ بند مجھ پر ایک وا ہونے لگا

اِک نگاہِ ناز کی پھرنے لگیں آنکھیں مجازؔ
اِک بُتِ کافر کا دِل درد آشنا ہونے لگا

۱۹۴۵ء

शरारे

ख़ुद को बहलाना था आख़िर ख़ुद को बहलाता रहा
मैं बई-सोज़-ए-दरूं[1]? हंसता रहा गाता रहा

मुझको एहसास-ए-फ़रेब-ए-रंगो-ओ-बू होता रहा
मैं मगर फिर भी फ़रेब-ए-रंगो-ओ-बू खाता रहा

मेरी दुनिया-ए-वफ़ा में क्या-से-क्या होता रहा
इक दरीचा बन्द मुझ पर एक वा[2] होने लगा

इक निगाह-ए-नाज़ की फिरने लगीं आँखें 'मजाज़'
एक बुत-ए-काफ़िर का दिल दर्द-आशना[3] होने लगा।

1945

□

---

1. अन्दर की जलन 2. खुलना 3. दर्द से वाकिफ़ होना।

گیت

کون مِرے سپنے میں آ کر رہ رہ کر مُسکائے
امرت رس برسائے
من کی کلی کھِل جائے
کون مرے سپنے میں آ کر رہ رہ کر مُسکائے
کون ایکایک سامنے آ کر نین سے نین ملائے
اور کبھی چھپ جائے
چھپ چھپ کر للچائے
کون مرے سپنے میں آ کر رہ رہ کر مُسکائے
جیون کے آکاش پہ چمکے رہ رہ کر مُسکائے
سندر روشن نیارا
من میں جوت جگائے
کون مرے سپنے میں آ کر رہ رہ کر مُسکائے
شوخ، سجیلا، رسیلا، چنچل چھیڑ کرے تڑپائے
میں روٹھوں وہ منائے
بہلا کر سمجھائے
کون مرے سپنے میں آ کر رہ رہ کر مُسکائے
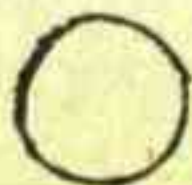
गीत

कौन मेरे सपने में आकर रह-रह कर मुसकाए

अमृत रस बरसाए
मनकी कली खिल जाए

कौन मेरे सपने में आकर रह-रहकर मुसकाए
कौन यकायक सामने आकर नैन से नैन मिलाए

और कभी छिप जाए
छिप-छिप कर ललचाए

कौन मेरे सपने में आकर रह-रह कर मुसकाए
जीवन के आकाश पे चमके रह-रह कर मुसकाए

सुन्दर रौशन न्यारा
मन में जोत जगाए

कौन मेरे सपने में आकर रह-रह कर मुसकाए
शोख़, सजीला[1], रसीला, चंचल छेड़ करे तड़पाए

मैं रुठूं वह मनाए
बहलाकर समझाए

कौन मेरे सपने में आकर रह-रह कर मुसकाए

□

---

1. दिल को भाने वाला।

غزل

ساقیٔ گلفام با صد اہتمام آہی گیا
نغمہ بر لب، خم بہ سر، بادہ بجام آہی گیا
اپنی نظروں میں نشاطِ جلوۂ خوباں لئے
خلوتِ خاص سوئے بزمِ عام آہی گیا
میری دنیا جگمگا اٹھی کسی کے نور سے
میرے گردوں پر مرا ماہِ تمام آہی گیا
جھوم جھوم اٹھے شجر کلیوں نے آنکھیں کھول دیں
جانبِ گلشن کوئی مستِ خرام آہی گیا
پھر کسی کے سامنے چشمِ تمنا جھک گئی
شوق کی شوخی میں رنگِ احترام آہی گیا

(مسلسل)

ग़ज़ल

साक़ी-ए-गुलफ़ाम[1] बा सद एहतेमाम आ ही गया
नग़मा बर लब, ख़ुम बसर, बादा बजाम[2] आ ही गया

अपनी नज़रों में निशात-ए-जलवा-ए-ख़ूबां[3] लिए
ख़िलवती-ए-ख़ास सू-ए-बज़्म-ए-आम आ ही गया

मेरी दुनिया जगमगा उठी किसी के नूर से
मेरे गरदूं पर मेरा माह-ए-तमाम आ ही गया

झूम-झूम उठे शजर कलियों ने आँखें खोल दीं
जानिब-ए-गुलशन कोई मस्त-ए-ख़िराम[4] आ ही गया

फिर किसी के सामने चश्म-ए-तमन्ना झुक गई
शौक़ की शोख़ी में रंग-ए-एहतेराम आ ही गया।

□

---

1. साग़र का महबूब 2. प्याला और सुराही लेकर 3. ख़ूबसूरत महबूबों का दीदार 4. मस्त चाल।

میری شب اب میری شب ہے، میرا بادہ میرے جام
وہ مرا سرور رواں ماہِ تمام آ ہی گیا

بارہا ایسا ہوا ہے یاد تک دِل میں نہ تھی
بارہا مستی میں لب پر اُن کا نام آ ہی گیا

زندگی کے خاکۂ سادہ کو رنگیں کر دیا
حُسن کام آئے نہ آئے عشق کام آ ہی گیا

کُھل گئی تھی صاف گردوں کی حقیقت اے مجاز
خیرت گذری کہ شاہیں زیرِ دام آ ہی گیا

۱۹۴۵ء

मेरी शब अब मेरी शब है मेरा बादा मेरा जाम[1]
वह मेरा सुरूर वाँ माह-ए-तमाम आ ही गया

बारहा ऐसा हुआ याद तक दिल में न थी
बारहा मस्ती में लब पर उनका नाम आ ही गया

ज़िन्दगी के ख़ाका-ए-सादा को रँगीं कर दिया
हुस्न काम आए-न-आए इश्क़ काम आ ही गया

खुल गई थी साफ़ गरदूँ[2] की हक़ीक़त ऐ 'मजाज़'
ख़ैरियत गुज़री कि शाहीं ज़ेर-ए-दाम[3] आ ही गया !

1945

□

---

1. शराब और प्याला 2. आसमान की असलियत 3. जाल के अन्दर।

اِعتراف

اب مرے پاس تم آئی ہو تو کیا آئی ہو؟
میں نے مانا کہ تم اک پیکرِ رعنائی ہو
چمنِ دہر میں رُوحِ چمن آرائی ہو
طلعتِ مہر ہو، فردوس کی بَرنائی ہو
بنتِ مہتاب ہو گردوں سے اُتر آئی ہو
مجھ سے ملنے میں اب اندیشۂ رسوائی ہے
میں نے خود اپنے کیے کی یہ سزا پائی ہے
خاک میں آہ ملائی ہے جوانی میں نے
شعلہ زاروں میں جلائی ہے جوانی میں نے
شہرِ خوباں میں گنوائی ہے جوانی میں نے
خوابگاہوں میں جگائی ہے جوانی میں نے

एतेराफ़

अब तुम मेरे पास आई हो तो क्या आई हो ?

मैंने माना कि तुम इक पैकर-ए-रानाई[1] हो
चमन-ए-दहर में रूह-ए-चमन आराई हो

तलअत-ए-महर हो, फ़िरदौस की बरनाई[2] हो
बिन्ते महताब हो गरदूं[3] से उतर आई हो

मुझसे मिलने में अब अन्देशा-ए-रुसवाई है
मैंने खुद अपने किये की यह सज़ा पाई है

खाक में आह मिलाई है जवानी मैंने
शोला ज़ारों में जलाई है जवानी मैंने

शहर-ए-ख़ूबां में गँवाई है जवानी मैंने
ख़्वाबगाहों में जगाई है जवानी मैंने

□

---

1. ख़ूबसूरती शरीर वाली 2. सुन्दरता 3. आसमान।

غزل

شوق کے ہاتھوں اے دلِ مضطر کیا ہونا ہے کیا ہوگا
عشق تو رُسوا ہو ہی چکا ہے حُسن بھی کیا رُسوا ہوگا

حسن کی بزمِ خاص میں جا کر اِس سے زیادہ کیا ہوگا
کوئی نیا پیماں باندھیں گے کوئی نیا وعدا ہوگا

چارہ گری سر آنکھوں پر اِس چارہ گری سے کیا ہوگا
درد کی اپنی آپ دوا ہے تم سے کیا اچھا ہوگا

واعظِ سادہ لوح سے کہہ دو چھوڑے عقبیٰ کی باتیں
اِس دنیا میں کیا رکھا ہے اُس دنیا میں کیا ہوگا

تم بھی مجازؔ انسان ہو آخر لاکھ چھپاؤ عشق اپنا
یہ بھید مگر کھُل جائے گا یہ راز مگر افشا ہوگا

۱۹۴۵ء
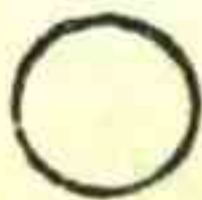
ग़ज़ल

शौक़ के हाथों ऐ दिल-ए-मुज़तर[1] क्या होना है क्या होगा
इश्क़ तो रुसवा[2] हो ही चुका है हुस्न भी क्या रुसवा होगा

हुस्न की बज़्म-ए-खास में जाकर इससे ज़्यादा क्या होगा
कोई नया पैमां[3] बांधेंगे कोई नया वादा होगा

चारागरी सर आंखों पर इस चारागरी से क्या होगा
दर्द कि अपनी आप दवा है, तुमसे क्या अच्छा होगा

वाइज़-ए-सादा लौह[4] से कह दो छोड़ें उक़बा[5] की बातें
इस दुनियां में क्या रखा है, उस दुनियां में क्या होगा

तुम भी 'मजाज़' इन्सान हो लाख छुपाओ इश्क़ अपना
ये भेद मगर खुल जाएगा ये राज़ मगर अफ़शा[6] होगा

1945

□

---

1. बेचैन दिल 2. बदनाम 3. वादा 4. सादा मिजाज़
5. परलोक 6. ज़ाहिर।

غزل

آسماں تک جو نالہ پہنچا ہے
دل کی گہرائیوں سے نکلا ہے

میری نظروں میں حشر بھی کیا ہے
میں نے اُن کا جلال دیکھا ہے

جلوۂ طور خوابِ موسیٰؑ ہے
کِس نے دیکھا ہے کِس کو دیکھا ہے

ہائے انجام اس سفینے کا
ناخدا نے جسے ڈبویا ہے

آہ کیا دل میں اب لہو بھی نہیں
آج اشکوں کا رنگ پھیکا ہے

جب بھی آنکھیں ملیں اُن آنکھوں سے
دل نے دِل کا مِزاج پوچھا ہے

وہ جوانی کہ تھی حریفِ طرب
آج بربادِ جام وصہبا ہے

کون اُٹھ کر چلا مقابل سے
جس طرف دیکھئے اندھیرا ہے

پھر مری آنکھ ہو گئی نمناک
پھر کسی نے مزاج پوچھا ہے

سچ تو یہ ہے مجازؔ کی دنیا
حُسن اور عشق کے سوا کیا ہے

۱۹۴۵ء

ग़ज़ल

आसमाँ तक जो नाला[1] पहुँचा है
दिल की गहराइयों से निकला है

मेरी नज़रों में हश्र भी क्या है
मैंने उनका जलाल[2] देखा है

जलवा-ए-तूर ख़्वाब-ए-मूसा है
किसने देखा है किसको देखा है

हाय अन्जाम उस सफ़ीने का
नाख़ुदा ने जिसे डुबोया है

आह क्या दिल में अब लहू भी नहीं
आज अश्कों का रंग फीका है

जब भी आँखें मिलीं उन आँखों से
दिल ने दिल का मिज़ाज पूछा है

वह जवानी कि थी हरीफ़-ए-तरब[3]
आज बरबाद जाम-ओ-सहबा है

कौन उठकर चला मुक़ाबिल से
जिस तरफ़ देखिये अन्धेरा है

फिर मेरी आँख हो गई नमनाक[4]
फिर किसी ने मिज़ाज पूछा है

सच तो यह है 'मजाज़' की दुनियाँ
हुस्न और इश्क़ के सिवा क्या है!

□

1945

---

1. दिल की आवाज़ 2. ग़ुस्सा 3. नाज़ के क़ाबिल 4. भीगी हुई।

اِلٰہ آباد سے

بتاریخ ۲ر فروری ۱۹۴۵ء جس دن سنگم کی رومان خیز سرزمین پر جشنِ سالگرہ لکھنے والے شاعر کی سالگرہ منائی گئی

●

اِلٰہ آباد میں ہر سُو ہیں چرچے — کہ "دِلی کا شرابی" آ گیا ہے
بہ صد آوارگی، باصد تباہی — بہ صد خانہ خرابی آ گیا ہے
گلابی لاؤ، چھلکاؤ، لنڈھاؤ — کہ شیدائے گلابی آ گیا ہے
نگاہوں میں خمارِ بادہ لے کر — نگاہوں کا شرابی آ گیا ہے
وہ سرکش، رہزنِ ایوانِ خوباں — بہ عزمِ باریابی آ گیا ہے
وہ رسوائے جہاں، ناکامِ دوراں — بہ زعمِ کامیابی آ گیا ہے
بُتانِ نازفرما سے یہ کہہ دو — کہ اِک ترکِ شہابی آ گیا ہے
نواسنجانِ سنگم کو بتا دو — حریفِ فاریابی آ گیا ہے
یہاں کے شہریاروں کو خبر دو — کہ مردِ انقلابی آ گیا ہے

۱۹۴۵ء
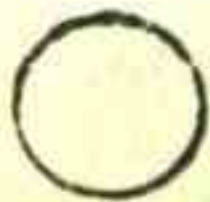
इलाहाबाद से

[2 फरवरी 1945 जिस दिन संगम की रूमनाखेज सरजमीन पर जश्न-ए-सालगिरह लिखने वाले शायर की सालगिरह मनाई गई।]

इलाहाबाद में हरसू[1] हैं चरचे
कि दिल्ली का शराबी' आ गया है
ब-सद-आवारगी[2], बासद तबाही[3]
ब-सद खाना खराबी आ गया है
गुलाबी लाओ, छलकाओ लुंढाओ
कि शैदा-ए-गुलाबी[4] आ गया है
निगाहों में खुमार-ए-बादा[5] लेकर
निगाहों का शराबी आ गया है
वह सरकश, रहज़न-ए-ऐवान-ए-खूंबा[6]
बा अज़्म-ए-बारयाबी आ गया है
वह रुसवाए जहाँ नाकाम-ए-दौरां
बाज़ोम-ए-कामयाबी आ गया है
बुताने नाज़ फ़रमा से यह कह दो
कि एक तुर्क-ए-शहाबी आ गया है
नवा सनजान-ए-संगम को बता दो
हरीफ़-ए-फारयाबी आ गया है
यहाँ से शहर पारों[7] को खबर दो
कि मर्द-ए-इनक़लाबी आ गया है

1945

□

---

1. सभी तरफ 2. आवारगी के साथ 3, तबाही के साथ
4. शराबी 5. शराब का नशा 6. हसीनों के महल का डाकू
7. शहर के साथियों को बताओ।

آج

کارفرما پھر مرا ذوقِ غزلخوانی ہے آج
پھر نفس کا ساز گرمِ شعلہ افشانی ہے آج
پھر نگاہِ شوق کی گرمی ہے اور روئے نگار
پھر عرق آلود اک کافر کی پیشانی ہے آج
پھر مرے لب پر قصیدے ہیں لب و رخسار کے
پھر کسی چہرے پہ تابانی سی تابانی ہے آج
حسن اس درجہ نشاطِ حسن میں ڈوبا ہوا
انکھڑیاں بےخود شمیمِ زلف دیوانی ہے آج
لرزشِ لب میں شرابِ شعر کا طوفان ہے
جنبشِ مژگاں میں افسونِ غزلخوانی ہے آج
وہ نفس کی زمزمہ سنجی نظر کی گفتگو
سینۂ معصوم میں اک طرفہ طغیانی ہے آج
یاں بہ ایں عالم غرورِ یوسفیت بھی نہیں
واں زلیخائی بہ عزمِ چاکدامانی ہے آج

۱۹۴۵ء

आज

कार फ़रमा फिर मेरा ज़ौक़[1]-ए-ग़ज़लख्वानी है आज
फिर नफ़स का साज़-ए-गर्म शोला अफ़शानी है आज

फिर निगाह-ए-शौक़ की गरमी है और रुए-निगार
फिर अरक़ आलूद इक काफ़िर की पेशानी है आज

फिर मेरे लब पर क़सीदे हैं लब-ओ-रुख़सार के
फिर किसी चेहरे पे ताबानी-सी-तबानी है आज

हुस्न इस दर्जा निशात[2]-ए-हुस्न में डूबा हुआ
अंखड़ियाँ बे ख़ुद शमीम-ए-ज़ुल्फ़ दीवानी है आज

लरज़िश-ए-लब में शराब-ओ-शेर का तूफ़ान है
जुमबिश-ए-मिज़गाँ[3] में अफ़सून-ए-ग़ज़लख्वानी है आज

वह नफ़स की ज़मज़मा सनजी[4] नज़र की गुफ़्तगू
सीना-ए-मासूम में इक तुरफ़ा तुग़यानी है आज

याँ बईं आलम ग़ुरुर-ए-यूसुफ़ीयत भी नहीं
वाँ ज़ुलेख़ाई ब अज़्म-ए-चाकदामानी है आज।

1945

□

---

1. शौक़ 2. ख़ुशी 3. भवों की हरकत 4. शेर शायरी।

مہمان

آج کی رات اور باقی ہے
کل تو جانا ہی ہے سفر پہ مجھے
زندگی منتظر ہے منہ پھاڑے
زندگی خاک و خون میں لتھڑی
آنکھ میں شعلہ ہائے تُند لئے

دو گھڑی خود کو شادماں کر لیں
آج کی رات اور باقی ہے
جلنے ہی کو ہے اک سموم ابھی
رقص فرما ہے روحِ بربادی
بربریت کے کاروانوں سے
زلزلے میں ہے سینۂ گیتی

ذوقِ پنہاں کو کامراں کر لیں
آج کی رات اور باقی ہے

मेहमान

आज की रात और बाक़ी है

कल तो जाना ही है सफ़र पे मुझे
ज़िन्दगी मुंतज़िर हैं मुंह फाड़े
ज़िन्दगी ख़ाक-ओ-ख़ून में लुथड़ी
आंख में शोला हाय तुंद[1] लिये

दो घड़ी ख़ुद को शादमां कर ले
आज की रात और बाक़ी है

चलने ही को है इक समूम[2] अभी
रक़्स फ़रमा है रूह-ए-बरबादी
बरबरीयत[3] के कारख़ानों से
ज़लज़ले में है सीना-ए-गेती

ज़ौक़-ए-पिनहां को कामरां कर लें
आज की रात और बाक़ी है!

□

---

1. तेज़ लपट और ग़ुस्सा 2. गरम ज़हरीली हवा 3. ज़ुल्म।

بُول! اَرِی اُو دھرتی بُول!

بول! اری او دھرتی بول!
راج سنگھاسن ڈانواڈول

بادل بجلی رین اندھیاری دُکھ کی ماری پرجا ساری
بوڑھے بچے سب دُکھیا ہیں دُکھیا نر ہیں دُکھیا ناری
بستی بستی لوٹ مچی ہے سب بنئے ہیں سب بیوپاری

بول! اری او دھرتی بول!
راج سنگھاسن ڈانواڈول

کلجگ میں جگ کے رکھوالے چاندی والے سونے والے
دیسی ہوں یا پردیسی ہوں نیلے پیلے گورے کالے
مکھی بھنگے بھن بھن کرتے ڈھونڈے ہیں مکڑی کے جالے

بول! اری او دھرتی بول!
راج سنگھاسن ڈانواڈول

۱۹۴۵ء
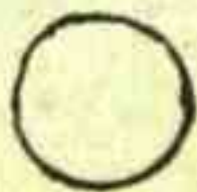
बोल ! अरी ओ धरती बोल !

बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंघासन[1] डाँवा डोल !

बादल बिजली रैन-अंधियारी[2]
दुःख की मारी प्रजा सारी

बूढ़े-बच्चे सब दुखिया हैं
दुखिया नर है दुखिया नारी

बस्ती-बस्ती लूट मची है
सब बनिये हैं सब व्योपारी

बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंघासन डाँवा डोल !

कलजुग[3] में जुग के रखवाले
चाँदी वाले सोने वाले

देसी हों या परदेसी हों
नीले, पीले गोरे, काले

मक्खी भुंगे भुन-भुन करते
ढूंडे हैं मकड़ी के जाले

बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंघासन डाँवा डोल !

1945

□

राजगद्दी 2. अन्धेरी रात 3. बुरा ज़माना ।

گیت

آ رہی ہے نرالی بہار
جی میں جو کچھ ہے وہ کوئی کیسے کہے
میری رگ رگ میں نس نس مدرا بہے
بج رہے ہیں خوشی کے ستار
آ رہی ہے نرالی بہار
میری آشاؤں نے آج پہلے پہل
حسرتوں کا بنایا ہے رنگیں محل
کوئی کھولے ہے جس کے دوار
آ رہی ہے نرالی بہار
تارے ناچیں ہواؤں میں چھاگل بجے
میری دنیا سجے اور پل پل سجے
ہر طرف اک انوکھا نکھار
آ رہی ہے نرالی بہار
میری دنیا ہے کیا جگمگائی ہوئی
ہر طرف زندگی مسکرائی ہوئی
من ہے کیسی خوشی سے دوچار
آ رہی ہے نرالی بہار

गीत

आ रही है निराली बहार

जी में जो कुछ है वह कोई कैसे कहे
मेरी रग-रग में नस-नस में मदरा[1] बहे

बज रहे हैं ख़ुशी के सितार
आ रही है निराली बहार

मेरी आशाओं ने आज पहले पहल
हसरतों का बनाया है रँगीं महल

कोई खोले है जिसके द्वार[2]
आ रही है निराली बहार

तारे नाचें हवाओं में छागल बजे
मेरी दुनिया सजे और पल-पल सजे

हर तरफ़ इक अनोखा निखार
आ रही है निराली बहार

मेरी दुनिया है क्या जगमगाई हुई
हर तरफ़ ज़िन्दगी मुसकुराई हुई

मन है कैसी ख़ुशी से दोचार
आ रही है निराली बहार !

□

---

1. शराब 2. दरवाज़े ।

بُتانِ حرم

کیا کہوں میں رات کس محفل میں تھا گرمِ نوا
نغمہ و نکہت کا وہ طوفان وہ ٹھنڈی ہوا
دیدنی تھا نازنینانِ تمدّن کا ہجوم
بے حقیقت تھے نگاہوں میں مہ و مہر و نجوم
نازپرور وہ حسیں، افکارِ غم سے بے نیاز
مہ جبینانِ حرم قیدِ حرم سے بے نیاز
جن کی اک جنبش سے بنیادِ حرم میں ارتعاش
جن کی اک ٹھوکر سے زنجیرِ قدامت پاش پاش
بن گیا تھا یک بیک فردوسِ کیف و انبساط
ایک دیرینہ کرم فرما کا ایوانِ نشاط
نرم صوفے گود میں فردوس رعنائی لئے
زلف کے خم، مرمریں شانوں کی برنائی لئے
وہ حسیں پیشانیاں آئینۂ تمکینِ ناز
وہ رسیلی مدھ بھری آنکھیں وہ مژگانِ دراز

(مسلسل)

बुतान-ए-हरम

क्या कहूँ मैं रात किस महफ़िल में था गर्म-ए-नवा[1]
नग़मा-ओ-निकहत का वह तूफ़ान वह ठंडी हवा

दीदनी था नाज़नीनान-ए-तमद्दुन का हुजूम
बे हक़ीक़त थे निगाह-ओं-में महो महर-ओ-नुजूम

नाज़ परवर वह हसी अफ़कार-ए-ग़म से बे-नियाज़
महज़बीनान-ए-हरम, क़ैद-ए-हरम से बे-नियाज़

जिनकी एक जुंबिश से बुनयाद-ए-हरम मे इरतेआश[2]
जिनकी एक ठोकर से ज़ंजीर-ए-क़दा मत[3] पाश-पाश

बन गया था यक-ब-यक फ़िरदौस-ए-कैफ़-ओ-इनबेसात[4]
एक देरीना करम फरमा का ऐवान-ए-निशात

नर्म सौफ़े गोद में फ़िरदौस रानाई के लिए
ज़ुल्फ़ के खम मरमरीं शानो की बरनाई के लिए

वह हसीं पेशानियाँ आईना-ए-तमक़ीन-ए-नाज़
वह रसीली मदभरी आँखें वह मिजगान-ए-दराज़

□

---

1. जोश से हिस्सा लेना 2. हलचल 3. पुरानी रविश और तरीक़ा 4. खुशी।

وہ سبک چاندی سے پیکر وہ جوانی کا نکھار
آذرِ فطرت کی صناعی کے زندہ شاہکار
رُخ پہ شادابی، لبوں میں رس تبسم برق پاش
چُست پیراہن، نمایاں جسمِ سیمیں کی تراش
شوخ آنکھیں بادۂ گلگوں کے پیمانے لئے
گیسوئے شب رنگ پیچ و خم میں افسانے لئے
آہ وہ حُسنِ مقابل وہ جمالِ ہم نشیں
دامنِ موجِ ہوا میں اک بہشتِ عنبریں
اک طرف سحرِ ملاحت، اک طرف افسونِ ناز
اک طرف زلفِ بریدہ، اک طرف زُلفِ دراز
آنچلوں کی سرسراہٹ، زمزمے گاتی ہوئی
پیرہن سے نکہتِ خلدِ بریں آتی ہوئی
آہ وہ دوشیزہ لب، گلریز لب، گلنار لب
آہ وہ لب آشنا لب، شوخ لب، خونبار لب

(مسلسل)

वह सुबक चांदी से पैकर वह जवानी का निखार
आज़र-ए-फ़ितरत की सन्नाई[1] के ज़िन्दा शाहकार[2]

रुख़ पे शादाबी, लबों में रस तबस्सुम बर्क़पाश
चुस्त पैराहन, नुमायाँ जिस्म-ए-सीमी[3] की तराश

शोख़ आँखें बाद-ए-गुलगूं के पैमाने लिए
गेसू-ए-शब रँग पेच-ओ-ख़म में अफ़साने लिए

आह वह हुस्न-ए-मुक़ाबिल वह जमाल-ए-हम नशीं
दामन-ए-मौज-ए-हवा में इक बहिशत-ए-अमबंरीं

इक तरफ़ सहर-ए-मलाहत, इक तरफ़ अफ़सून[4]-ए-नाज
इक तरफ़-ए-ज़ुलफ़े बुरीदा, इक तरफ़-ए-ज़ुल्फ़े दराज़

आँचलों की सरसराहट, ज़मज़मे गाती हुई
पैराहन से निकहत-ए-ख़ुल्द-ए-बरीं आती हुई

आह वह दोशीज़ा लब, गुलरेज़ लब, गुलनार लब
आह वह लब आशना लब, शोख़ लब ख़ूंबार लब

□

---

1. बनावट 2. नमूना 3. चाँदी जैसा शरीर 4. जादू लिये हुए।

وہ حجاب آگیں تکلّم، وہ رسیلے قہقہے!
وہ نشاط آگیں تبسّم، وہ سُریلے قہقہے!
قہقہے جن میں صبا کا راگ سیّاروں کے گیت
نقرئی نَے کی صدا جنّت کے مہ پاروں کے گیت
جامِ زرّیں کی کھنک سی قلقلِ مینا کے ساتھ
قدسیوں کی لَے سُرودِ بربطِ زہرا کے ساتھ
شوخیِ لبِ ناز فرما خندۂ بے باک پر
نورِ موسیقی کی اک بارش سی فرشِ خاک پر
گفتگو کچھ اس سلیقے سے کچھ اس انداز سے
دل بچانا سخت مشکل تھا کمندِ ناز سے
وہ لچک سی جسمِ نازک میں خود اپنے بار سے
چھوٹ نکلیں تھیں شعاعیں عارض و رخسار سے
وہ سمٹنے کی ادا طوفانِ رعنائی کے ساتھ
ذوقِ خود بینی مذاقِ بزم آرائی کے ساتھ

(مسلسل)

वह हिजाब आगीं[1] तकल्लुम, वह रसीले क़हक़हे !
वह निशात आगीं[2] तबस्सुम, वह सुरीले क़हक़हे !

क़हक़हे जिन में सबा का राग सय्यारों के गीत
नुक़रई[3] नै की सदा जन्नत के महपारों के गीत

जाम-ए-ज़रीं की खुनक-सी क़ुलक़ुल-ए-मीना के साथ
क़ुदसियों की लै सुरुद-ए-बरबत-ए-ज़ोहरा के साथ

शोख़ि-ए-लब नाज़ फ़रमा खन्दा-ए[5]-बेबाक पर
नूर-ओ-मौसीक़ी की इक बारिश-सी फ़र्श-ए-खाक पर

गुफ़्तगू कुछ इस सलीक़े से कुछ इस अन्दाज़ से
दिल बचाना सख्त मुशकिल था कमन्द-ए-नाज़ से

वह लचक-सी जिस्म-ए-नाज़ुक में खुद अपने बार से
फूट निकलीं थीं शुआएँ आरिज़-ओ-रुखसार से

वह सिमटने की अदा तूफ़ान-ए-रानाई के साथ
ज़ौक़-ए-खुदबीनी मज़ाक़-ए-बज़्म आराई के साथ

□

---

1. परदे के साथ 2. खुशी के साथ 3. मीठी आवाज़ 4. खुशी
5. हँसते हुए।

عارضوں پر اک گلابی پن سا ماتھوں پر دمک
انکھڑیوں میں اِک سُرورِ فتح مندی کی جھلک
بام و در پر اک تبسم سا، فضا گُلرنگ تھی!
جنبشِ مژگاں دھڑکتے دل سے ہم آہنگ تھی
میرا نغمہ باعثِ دلداری خوباں تو ہے
میرا نالہ خیر سے وجہ نشاطِ جاں تو ہے

۱۹۴۶ء

आरिज़ों पर इक गुलाबीपन सा माथों पर दमक[1]
अँखड़ियों में एक सुरुर-ए-फ़तह मन्दी की झलक

बाम-ओ-दर[3]पर एक तबस्सुमसा,फ़िज़ा गुलरँग थी !
जुमबिश-ए-मिजगाँ धड़कते दिल से हम आहँग[5] थी

मेरा नग़मा बाईस-ए-दिलदारी-ए-ख़ूबाँ तो है
मेरा नाला ख़ैर से वजह निशात-ए-जाँ तो है !

1946

□

---

1. चमकना 2, खुशी 3. छत और दरवाज़े 4. भवों की हरकत 5. मिली हुई।

غزل

نہیں یہ فکر کوئی رہبرِ کامل نہیں ملتا
کوئی دنیا میں مانوسِ مزاجِ دل نہیں ملتا

کبھی ساحل پہ رہکر شوق، طوفانوں سے ٹکرائیں
کبھی طوفانوں میں رہ فکر ہے ساحل نہیں ملتا

یہ آنا کوئی آنا ہے کہ بس رسماً چلے آئے
یہ ملنا خاک ملنا ہے کہ دل سے دل نہیں ملتا

شکستہ پا کو مژدہ، خستگانِ راہ کو مژدہ
کہ رہبر کو سُراغِ جادۂ منزل نہیں ملتا

وہاں کتنوں کو تخت و تاج کا ارماں ہے کیا کہیے
جہاں سائل کو اکثر کاسۂ سائل نہیں ملتا

یہ قتلِ عام اور بے اذن قتلِ عام کیا کہیے
یہ بسمل کیسے بسمل ہیں جنہیں قاتل نہیں ملتا

۱۹۴۸ء
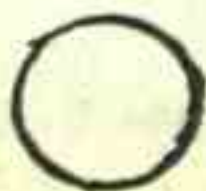
ग़ज़ल

नहीं यह फ़िक्र कोई रहबर-ए-कामिल[1] नहीं मिलता
कोई दुनियां में मानूस-ए-मिज़ाज-ए-दिल नहीं मिलता

कभी साहिल पे रहकर शौक़, तूफ़ानों से टकराएँ
कभी तूफ़ानों में रह कर फ़िक्र है साहिल नहीं मिलता

यह आना कोई आना है कि बस रसमन चले आए
यह मिलना ख़ाक मिलना है कि दिल-ए-दिल नहीं मिलता

शिकसता पा को मुज़दा[2], ख़स्तगान-ए-राह को मुज़दा
कि रहबर को सुराग़-ए-जादा-ए-मंज़िल[3] नहीं मिलता

वहाँ कितनो को तख़्त-ओ-ताज का अरमाँ है क्या कहिये
जहां साइल को अकसर कासा-ए-साइल नहीं मिलता

यह क़तल-ए-आम और बेइज़्न क़तल-ए-आम क्या कहिये
यह बिसमिल कैसे बिसमिल हैं जिन्हें क़ातिल नहीं मिलता

1948

□

---

1. सही रासता दिखाने वाला 2. ख़ुशख़बरी 3. मंज़िल का पता।

فکر

نہیں ہر چند کسی گمشدہ جنّت کی تلاش
اِک نہ اِک خلدِ طربناک کا ارماں ہے ضرور
بزمِ دوشینہ کی حسرت تو نہیں ہے مجھ کو
میری نظروں میں کوئی اور شبستاں ہے ضرور

مٹ کے، بربادِ جہاں ہو کے بھی کچھ کھو کے
بات کیا ہے کہ زیاں کا کوئی احساس نہیں
کار فرما ہے کوئی تازہ جنونِ تعمیر
دلِ مضطر ابھی آما جگہِ یاس نہیں

تازہ دم بھی ہوں مگر پھر یہ تقاضا کیا ہے
ہاتھ رکھ دے مرے ماتھے پہ کوئی زہرہ جبیں
ایک آغوشِ حسیں شوق کی معراج ہے کیا
کیا یہی ہے اثرِ نالۂ دلہائے حزیں
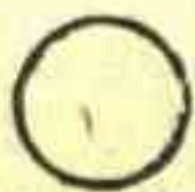
फ़िक्र

नहीं हर चंद किसी गुमशुदा[1] जन्नत की तलाश
इक न इक ख़ुल्द[2] तरबनाक का अरमाँ है ज़रूर

बज़्म-ए-दोशीना की हसरत तो नहीं है मुझको
मेरी नज़रों में कोई और शबिसताँ है ज़रूर

मिट के, बरबाद-ए-जहाँ होके सभी कुछ खोके
बात क्या है कि ज़ियाँ[3] का कोई एहसास नहीं

कारफ़रमा है कोई ताज़ए जुनूँ-ए-तामीर
दिल-ए-मुज़तर[4] अभी आमाजग-ह-ए-यास नहीं

ताज़ादम हूँ भी मगर फिर यह तकाज़ा क्यूँ है
हाथ रख दे मेरे माथे पे कोई ज़ोहरा जबीं

एक आग़ोश-ए-हसीं शौक़ की मेराज है क्या
क्या यही है असस-ए-नालआ-ए-दिलहाए हज़ीं

□

---

1. खोई हुई 2. पुरबहार जन्नत 3. नुक़सान 4. बेचैन दिल।

غزل

جنونِ شوق اب بھی کم نہیں ہے
مگر وہ آج بھی برہم نہیں ہے

بہت مشکل ہے دنیا کا سنورنا
تری زلفوں کا پیچ و خم نہیں ہے

بہت کچھ اور بھی ہے اس جہاں میں
یہ دنیا محض غم ہی غم نہیں ہے

تقاضے کیوں کروں پیہم نہ ساقی
کسے یاں فکرِ بیش و کم نہیں ہے

ادھر مشکوک ہے میری صداقت
ادھر بھی بدگمانی کم نہیں ہے

مری بربادیوں کا ہمنشینو!
تمہیں کیا خود مجھے بھی غم نہیں ہے

ابھی بزمِ طرب سے کیا اٹھوں میں
ابھی تو آنکھ بھی پرنم نہیں ہے

مجازؔ اک بادہ کش تو ہے یقیناً
جو ہم سنتے تھے وہ عالم نہیں ہے

سنہ ۱۹۵۰ء
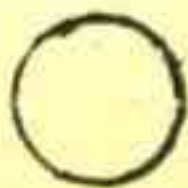
ग़ज़ल

जुनून-ए-शौक़ अब भी कम नहीं है
मगर वह आज भी बरहम नहीं है

बहुत मुशकिल है दुनिया का संवरना
तेरी ज़ुलफ़ों का पेचो ख़म नहीं है

बहुत कुछ और भी है इस जहां में
यह दुनिया महज़ ग़म ही ग़म नहीं है

तक़ाज़े क्यूं करूं पैहम न साक़ी
किसे यां फ़िक्र बेशो कम नहीं है

इधर मशकूक है मेरी सदाक़त
उधर भी बदगुमानी कम नहीं है

मेरी बरबादियों का हम नशीनों[1] !
तुम्हें क्या ख़ुद मुझे भी ग़म नहीं है !

अभी बज़्म-ए-तरब[2] से क्या उठूं मैं
अभी तो आंख भी पुरनम नहीं है

'मजाज़' इक बादा कश तो है यक़ीनन
जो हम सुनते थे वह आलम नहीं है !

1950

□

---

1. साथ में बैठने वाले 2. ख़ुशी की महफ़िल ।

غزل

جگر اور دِل کو بچانا بھی ہے
نظر آپ ہی سے ملانا بھی ہے

محبّت کا ہر بھید پانا بھی ہے
مگر اپنا دامن بچانا بھی ہے

جو دِل تیرے غم کا نشانہ بھی ہے
قتیلِ جفائے زمانہ بھی ہے

یہ بجلی چمکتی ہے کیوں دم بدم
چمن میں کوئی آشیانہ بھی ہے

خِرد کی اِطاعت ضروری سہی
یہی تو جنوں کا زمانہ بھی ہے

نہ دُنیا، نہ عُقبیٰ کہاں جائیے
کہیں اہلِ دل کا ٹھکانا بھی ہے

مجھے آج ساحل پہ رونے بھی دو
کہ طوفان میں مُسکرانا بھی ہے

زمانے سے آگے تو بڑھیئے مجازؔ
زمانے کو آگے بڑھانا بھی ہے

سنہ ۱۹۵۰ء
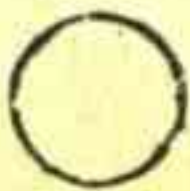
ग़ज़ल

जिगर और दिल को बचाना भी है
नज़र आप ही से मिलाना भी है

मुहब्बत का हर भेद पाना भी है
मगर अपना दामन बचाना भी है

जो दिल तेरे ग़म का निशाना भी है
क़ातील-ए-जफ़ा-ए-ज़माना[1] भी है

यह बिजली चमकती है क्यूँ दमबदम
चमन में कोई आशियाना भी है

ख़िरद की इताअत[2] ज़रूरी सही
यही तो जुनूँ का ज़माना भी है

न दुनिया न उक़बा कहाँ जाइए
कहीं अह्ल-ए-दिल का ठिकाना भी है

मुझे आज साहिल पे रोने भी दो
कि तूफ़ान में मुसकुराना भी है

ज़माने से आगे तो बढ़िये 'मजाज़'
ज़माने को आगे बढ़ाना भी है!

□

1950

---

1. दुनिया के सितम का शिकार 2. अक़्ल की पैरवी।

غزل

عاشق جاں فزا بھی ہوتی ہے
اور صبر آزما بھی ہوتی ہے

روح ہوتی ہے کیف پرور بھی
اور درد آشنا بھی ہوتی ہے

حسن کو کر نہ دے یہ شرمندہ
عشق سے یہ خطا بھی ہوتی ہے

بن گئی رسم بادہ خواری بھی
یہ نماز اب قضا بھی ہوتی ہے

جس کو کہتے ہیں نالۂ برہم
ساز میں وہ صدا بھی ہوتی ہے

کیا بتاؤں مجاز کی دنیا
کچھ حقیقت نما بھی ہوتی ہے

۱۹۵۲ء

ग़ज़ल

आशक़ी जाँफ़िज़ा भी होती है
और सब्र आज़मा भी होती है

रूह होती है कैफ़ परवर[1] भी
और दर्द आशना[2] भी होती है

हुस्न को कर न दे यह शर्मिन्दा
इश्क़ से ये ख़ता भी होती है

बन गई रस्म बादा ख़्वारी[3] भी
यह नमाज़ अब क़ज़ा भी होती है

जिसको कहते हैं 'नाला-ए-बरहम[4]'
साज़ में वह सदा भी होती है

क्या बताउँ, 'मजाज़' की दुनिया
कुछ हक़ीक़त नुमा भी होती है !

1952

□

---

1. ख़ुशी देने वाली 2. दर्द से भरी हुई 3. शराब पीना 4. ग़मो ग़ुस्से का इज़हार।

زہرابِ حُسن

حُسن اک کیفِ جاودانی ہے
اور جو چیز ہے وہ فانی ہے
حُسن کے دن بھی کیف پرور ہیں
حُسن کی رات بھی سہانی ہے
حُسن کی صبح اک شکستِ جمیل
حُسن کی شام کامرانی ہے
یہ کچھ افسانۂ تخیّل ہے
کچھ حقیقت کی ترجمانی ہے
کچھ ترے حُسن کا کرشمہ ہے
کچھ مری طبع کی روانی ہے

۱۹۵۲ء

जहराब-ए-हुस्न

हुस्न एक कैफ़-ए-जाविदानी[1] है
ग्रोर जो चीज़ है वह फ़ानी है

हुस्न के दिन भी कैफ़ परवर हैं
हुस्न की रात भी सुहानी है

हुस्न की सुबह एक शिकस्त-ए-जमील
हुस्न की शाम कामरानी[2] है

यह कुछ ग्रफ़साना-ए-तख़य्युल है
कुछ हक़ीक़त की तरजुमानी है

कुछ तेरे हुस्न का करिशमा है
कुछ मेरी तबा[3] की रवानी है!

1952

□

---

1. न मिटने वाली ख़ुशी 2. फ़तेह 3. तबीयत।

غزل

پرتوِ ساغرِ صہبا کیا تھا
رات اک حشر سا برپا کیا تھا

کیوں جوانی کی مجھے یاد آئی
میں نے اک خواب سا دیکھا کیا تھا

حسن کی آنکھ بھی نمناک ہوئی
عشق کو آپ نے سمجھا کیا تھا

عشق نے آنکھ جھکا لی ورنہ
حسن اور حسن کا پردا کیا تھا

کیوں مجاز آپ نے ساغر توڑا
آج یہ شہر میں چرچا کیا تھا

۱۹۵۲ء

ग़ज़ल

परतव-ए-साग़र-ए-सहबा क्या था
रात एक हश्र सा बरपा[1] क्या था

क्यूँ जवानी की मुझे याद आई
मैंने एक ख़्वाब सा देखा क्या था

हुस्न की आँख भी नमनाक[2] हुई
इश्क़ को आपने समझा क्या था

इश्क़ ने आँख झुकाली वरना
हुस्न और हुस्न का पर्दा क्या था

क्यूँ 'मजाज़' आपने साग़र[3] तोड़ा
आज यह शहर में चरचा क्या था

1952

□

---

1. छाया हुआ 2. गीली 3. प्याला।

غزل

یہ جہاں بارگہِ رتلِ گراں ہے ساقی
اک جہنّم مرے سینے میں تپاں ہے ساقی

جس نے برباد کیا، مائلِ فریاد کیا
وہ محبت ابھی اس دل میں جواں ہے ساقی

ایک دن آدم و حوّا ابھی کئے تھے پیدا
وہ اخوت تری محفل میں کہاں ہے ساقی

ہر چمن دامنِ گل رنگ ہے خونِ دل سے
ہر طرف شیون و فریاد و فغاں ہے ساقی

ماہ و انجم مری اشکوں سے گہرتاب ہوئے
کہکشاں نور کی ایک جوئے رواں ہے ساقی

حسن ہی حسن ہے جس سمت بھی اٹھتی ہے نظر
کتنا پُرکیف یہ منظر، یہ سماں ہے ساقی

مرے ہر لفظ میں بیتاب مرا سوزِ دروں
مری ہر سانس محبت کا دھواں ہے ساقی
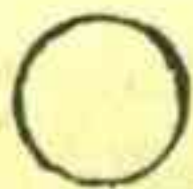
ग़ज़ल

यह जहाँ बारगह-ए-रतल-ए-गिरां है साक़ी
एक जहन्नुम मेरे सीने में तपाँ है साक़ी

जिसने बरबाद किया, माइल-ए- याद किया
वह मुहब्बत अभी इस दिल में जवां है साक़ी

एक दिन आदम-ओ-हव्वा भी किये थे पैदा
वह अख़ुव्वत[1] तेरी महफ़िल कहाँ है साक़ी

हर चमन दामन-ए-गुल रँग है ख़ून-ए-दिल से
हर तरफ़ शेवन-ओ-फ़रयाद-ओ-फ़ुग़ां है साक़ी

माह-ओ-अन्जुम मेरी अशको से गुहरताब हुए
कहकशाँ नूर की एक जू-ए-खाँ[2] है साक़ी

हुस्न ही हुस्न है जिस सिम्त भी उठती है नज़र
कितन पुर कैफ़ यह मन्ज़र, यह समाँ हैं साक़ी

मेरे हर लफ़्ज़ में बेताब मेरा सोज़-ए-दरूँ
मेरी हर साँस मुहब्बत का धुआँ है साक़ी !

□

---

1. मुहब्बत 2. बहती नहर।

نقوش

●

حجاب ناز میں جلوے چھپائے جاتے ہیں
جہاں میں اہلِ نظر آزمائے جاتے ہیں
ابھی بہار بہت دور ہے مگر دِل میں
جنونِ عشق کے آثار پائے جاتے ہیں
مٹا دیا ہے مجھے عشق نے مجاز مگر
ستانے والے ابھی تک ستائے جاتے ہیں

●

کیا ہوا میں نے اگر ہاتھ بڑھانا چاہا
آپ نے خود بھی تو دامن نہ بچانا چاہا
یوں تو افسانۂ اُلفت تھا ازل سے رنگیں
ہم نے کچھ اور بھی رنگین بنانا چاہا

●

مَے گلفام بھی ہے ساز عشرت بھی ہے ساقی بھی
مگر مشکل ہے آشوبِ حقیقت سے گذر جانا

नुक़ूश

हिजाब नाज़[1] में जलवे छिपाए जाते हैं
जहां में अहल-ए-नज़र आज़माए जाते हैं

अभी बहार बहुत दूर है मगर दिल में
जुनून-ए-इश्क़ के आसार पाए जाते हैं

मिटा दिया है मुझे इश्क़ ने 'मजाज़' मगर
सताने वाले अभी तक सताए जाते हैं

क्या हुआ मैंने अगर हाथ बढ़ाना चाहा
आपने ख़ुद भी तो दामन न बचाना चाहा

यूं तो अफ़साना-ए-उलफ़त था अज़ल से रंगा
हमने कुछ और भी रंगीन बनाना चाहा

मय-ए-गुलफ़ाम[2] भी है, साज-ए-इशरत भी है साक़ी भी
मगर मुशकिल है आशू-ए-हक़ीक़त[3] से गुज़र जाना

□

---

1. पर्दे में रहकर नाज़ो अदा दिखाना 2. लाल शराब 3. हक़ीक़त का इमतेहां।

قطعات

جگر کی خبر ہے نہ دل کی خبر
مگر لڑ رہی ہے نظر سے نظر
یہ سب جن کے ہیں خون سے ہاتھ تر
یہی تھے مسیحا، یہی چارہ گر

●

اک سبک اور حسیں کار ابھی گذری ہے
گنگناتی ہوئی سرشار ابھی گذری ہے
سُن رہا ہوں دلِ گیتی کے دھڑکنے کی صدا
خالقِ حُسن کی شہکار ابھی گذری ہے

●

اے شاعرِ آشفتہ و مستِ مئے سرجوش
کیا کہہ گیا شعروں میں تجھے یہ بھی نہیں ہوش
اک پیکرِ الطاف و عنایت پہ یہ طعنے
اِحسان فراموش، ارے احسان فراموش

क़तग्रात

जिगर की ख़बर है न दिल की ख़बर है
मगर लड़ रही है नज़र से नज़र

यह सब जिनके हैं ख़ून से हाथ तर
यही थे मसीहा, यही चारा गर[1]

□

एक सुबुक और हंसींकार अभी गुज़री है
गुनगुनाती हुई सरशार[2] अभी गुज़री है

सुन रहा हूँ दिल-ए-गेती के धड़कने की सदा
ख़ालिक़-ए-हुस्न की शहकार[3] अभी गुज़री है

□

ऐ शायर-ए-आशुफ़ता-ओ-मस्त मय-ए-सरजोश
क्या कह गया शेरों में तुझे यह भी नहीं होश

एक पैकर-ए-अलताफ़-ओ-इनायत[4] पे ये ताने
एहसास फ़रामोश, अरे एहसान फ़रामोश!

□

---

1. इलाज करने वाले 2. ख़ुशी से भरपूर 3. नमूना 4. मेहरबानी और करम।

●

یہ مانا آج دل فرطِ الم سے پارا پارا ہے
بلندی دیکھنے والے کو پستی کبھی گوارا ہے
ہزاروں کے لئے میں گر چکا ہوں بامِ گردوں سے
ہزاروں وہ ہیں جن کو میں نے گردوں سے آتارا ہے

●

وقت کی سعیِ مسلسل کارگر ہوتی گئی
زندگی لحظہ بہ لحظہ مختصر ہوتی گئی
سانس کے پردوں میں بجتا ہی رہا سازِ حیات
موت کے قدموں کی آہٹ تیز تر ہوتی گئی

●

زہد سے اجتناب زوروں پہ ہے
ذکرِ جام و شراب زوروں پہ ہے
کیا نہ ہوگا مجازؔ اب یوں بھی
ابھی میرا شباب زوروں پہ ہے

○

यह माना आज दिल फ़रत-ए-अलम[1] से पारा-पारा है
बुलन्दी देखने वाले को पसती भी गवारा है

हज़ारों के लिये मैं गिर चुका हूँ बाम-ए-गरदूं[2] से
हज़ारों वह हैं जिनको मैं ने गरदूं से उतारा है

□

वक़्त की सई-ए-मुसलसल[3] कारगर होती गई
ज़िन्दगी लहजा ब लहजा मुख़तसर होती गई

साँस के परदों में बजता ही रहा साज़-ए-हयात
मौत के क़दमों की आहट तेज़तर होती गई

□

ज़ोहद[4] से इजतेनाब[4] ज़ोर पे है
ज़िक्र जाम-ओ-शराब ज़ोर पे है

क्या न होगा 'मजाज़' अब यूँ भी
अभी मेरा शबाब ज़ोर पे है !

□

1. रंज की ज़्यादती 2. आसमान की छत से 3. लगातार कोशिश
4. परहेज़गारी 5. बचना ।

کفر کیا، تثلیث کیا، الحاد کیا، اسلام کیا
تو بہر صورت کسی زنجیر میں جکڑا ہوا
توڑ سکتا ہو تو پہلے توڑ دے سب قید و بند
بیڑیوں کے ساز پر نغماتِ آزادی نہ گا

●

یہ کوٹ بھی سفید، یہ پتلون بھی سفید
تیرے سفید ہیٹ کا ہے اُون بھی سفید
خود جسم بھی سفید ہے اور اس کے ساتھ ساتھ
میں تو یہ جانتا ہوں ترا خون بھی سفید

●

اپنا غم اوروں کو دے اوروں کا غم لینے سے کیا
تیری کشتی پار لگ جائے گی اس کھینے سے کیا
بات تو جب ہے کہ مر جا عرصہ گاہِ رزم میں
اس پہ دم دینے سے کیا اور اس پہ دم دینے سے کیا

कुफ़्र क्या, तसलीस[1] क्या, इलहाद[2] क्या, इसलाम क्या
तू बहर सूरत किसी ज़ंजीर में जकड़ा हुआ

तोड़ सकता हो तो पहले तोड़ दे सब क़ैद-ओ-बन्द
बेड़ियों के साज पर नग़मात-ए-आज़ादी न गा

□

ये कोट भी सफ़ैद, यह पतलून भी सफ़ैद
तेरे सफ़ैद हैट का है ऊन भी सफ़ैद

खुद जिस्म भी सफ़ैद है और उसके साथ-साथ
मैं तो यह जानता हूँ तेरा खून भी सफ़ैद

□

अपना ग़म औरों को दे औरों का ग़म लेने से क्या
तेरी कश्ती पार लग जाएगी इस खेने से क्या

बात तो जब है कि मर जा अरसा गाह-ए-रिज़्म में[3]
इस पे दम देने से क्या और उसपे दम देने से क्या

□

---

1. तीन खुदा मानना 2. कुफ़्र, खुदा को न मानना 3. जंग का मैदान।

غزل

دھواں سا اک سمت اٹھ رہا ہے شرارے اڑ اڑ کے آ رہے ہیں
یہ کس کی آہیں یہ کس کے نالے تمام عالم پہ چھا رہے ہیں

نقاب رخ سے اٹھا چکے ہیں، کھڑے ہوئے مسکرا رہے ہیں
میں حیرتیِ ازل ہوں اب بھی، وہ خاک حیراں بنا رہے ہیں

ہوائیں بے خود، فضائیں بے خود، یہ عنبر افشاں گھٹائیں بے خود
مژہ نے چھیڑا ہے سازِ دل کا وہ زیرِ لب گنگنا رہے ہیں

یہ شوق کی وارداتِ پیہم، یہ وعدۂ التفاتِ پیہم
کہاں کہاں آزما چکے ہیں، کہاں کہاں آزما رہے ہیں

صراحیاں نو بنو ہیں اب بھی، جماہیاں نو بنو ہیں اب بھی
مگر وہ پہلو تہی کی سوگند اور نزدیک آ رہے ہیں

وہ عشق کی وحشتوں کی ند میں، وہ تاج کی رفعتوں کے آگے
مگر ابھی آزما رہے ہیں، مگر ابھی آزما رہے ہیں

عطا کیا ہے مجازِ فطرت نے وہ مذاقِ لطیف ہم کو
کہ عالمِ آب و گلِ سے ہٹ کر اک اور عالم بنا رہے ہیں

۱۹۲۹ء

○

ग़ज़ल
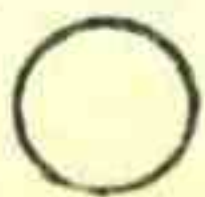
धुग्रां सा इक सिम्त उठ रहा है शरारे उड़-उड़ के ग्रा रहे हैं
यह किसकी ग्राहें यह किसके नाले तमाम ग्रालम पे
छा रहे हैं

नकाब रुख से उठा चुके हैं, खड़े हुए मुसकुरा रहे हैं
मैं हैरती-ए-ग्रज़्ल हूँ ग्रब भी, वह ख़ाक हैरां बना रहे हैं

हवाएँ बे-ख़ुद फिजाएँ बे-ख़ुद, यह ग्रम्बर ग्रफ़शां घटाएँ
बे-ख़ुद
मिज़्ह ने छेड़ा है साज़ दिल का,वह ज़ेर-ए-लब गुनगुना रहे हैं

यह शोक़की वारदात पैहम, ये वादा-ए-इलतेफ़ात[1]-ए-पैहम
कहाँ-कहाँ ग्राज़मा चुके हैं, कहाँ-कहाँ ग्राज़मा रहे हैं

सुराहियां नौ बनौ हैं ग्रब भी, जमाहियां नौ बनौ हैं ग्रब भी
मगर वह पहलूतिही की सौगंध ग्रौर नज़दीक ग्रा रहे हैं

वह इश्क़ की वहशतों की ज़द में, वह ताज की रफ़ग्रतों[2]
के ग्रागे
मगर ग्रभी ग्राज़मा रहे हैं, मगर ग्रभी ग्राज़मा रहे हैं

ग्रता किया है 'मजाज़' फितरत ने वह मज़ाक़-ए-लतीफ़ हमको
कि ग्रालम-ए-ग्राब-ग्रोगिल से हटकर एक ग्रौर ग्रालम बना
रहे हैं

1929

□

1. मोहब्बत 2. बुलन्दी।

آہنگِ جنوں

نہ چھیڑ اے ہم نشیں پھر مضطرب ہیں بجلیاں دل میں
مرے آتے ہی اکثر آگ لگ جاتی ہے محفل میں

مرے ہاتھوں میں جب عشق و جنوں کا ساز ہوتا ہے
زمیں کیا آسماں تک گوش بر آواز ہوتا ہے

مری آنکھوں میں فرطِ غم سے جب بھی اشک آئے ہیں
چمن کی ہر کلی نے خون کے آنسو بہائے ہیں

ہوا کے سرد جھونکے سسکیاں بھرتے نظر آئے
مہ و انجم مجھے سرگوشیاں کرتے نظر آئے

سراپا درد ہوں میں دکھ بھری گودوں کا پالا ہوں
میں ہر محفل کی زینت ہوں میں ہر گھر کا اجالا ہوں

نہ واعظ ہوں نہ ناصح ہوں نہ ہادی ہوں نہ رہبر ہوں
محبت میرا قرآں ہے جوانی کا پیمبر ہوں

ضعیفی محفلِ عشرت میں خرقہ پوش آتی ہے
جوانی جب بھی آتی ہے کفن بر دوش آتی ہے

۱۹۴۵ء
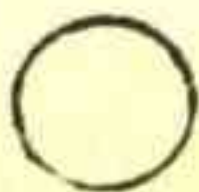
आहंग-ए-जुनूं

न छेड़ ऐ हमनशीं फिर मुज़तरब[1] हैं बिजलियाँ दिल में
मेरे आते ही अकसर आग लग जाती है महफ़िल में

मेरे हाथों में जब इश्क़-ओ-जुनूं का साज़ होता है
ज़मीं क्या आसमाँ तक गोश बरआवाज़ होता है

मेरी आँखों में फ़रत-ए-ग़म से जब भी अश्क आए हैं
चमन की हर कली ने ख़ून के आँसू बहाए हैं

हवा के सर्द झोंके सिसकियाँ भरते नज़र आए
मह-ओ-अन्जुम मुझे सरगोशियाँ करते नज़र आए

सरापा दर्द हूँ मैं दुख भरी गोदों का पाला हूँ
मैं हर महफ़िल की ज़ीनत हूँ मैं हर घर का उजाला हूँ

न वाइज़ हूँ न नासेह हूँ न हादी हूँ न रहबर हूँ
मुहब्बत मेरा क़ुरआँ है जवानी का पयम्बर[2] हूँ

जईफ़ी महफ़िल-ए-इशरत में खुरका पोश आती है
जवानी जब भी आती है कफ़न बरदोश[3] आती है!

1945

□

1. बेचैन 2. पैग़ाम लाने वाला 3. कफ़न अपने कान्धों पर लेकर आना।

نظم

بغاوت کا علم بردار ہوں مخشرِ بداماں ہوں
فرشتوں نے جسے سجدے کئے ہیں میں وہ انساں ہوں
پرانی دشمنی ہے اہلِ زر کے آستانوں سے
میں بجلی ہوں گرا کرتا ہوں اکثر آسمانوں سے
میں بادل بن کے صحراؤں پہ منڈلایا کیا برسوں
میں بجلی بن کے کاشانوں پہ لہرایا کیا برسوں
مرے ہی دم قدم سے بزمِ فطرت میں اجالا ہے
مجھے آندھی نے لوری دی ہے طوفانوں نے پالا ہے
جنوں کے راگ گاتا ہوں لہو کے اشک روتا ہوں
ہمیشہ کشتگانِ غم کی پہلی صف میں ہوتا ہوں
نظر آنے لگی ہیں پھر مرے خوابوں کی تعبیریں
مرے پائے جنوں پر ٹوٹتی پھرتی ہیں تقدیریں
مرے سینے میں مستقبل کے جلوے مسکراتے ہیں
مری گفتار سن کر اہلِ دولت کانپ جاتے ہیں

नज़्म

बग़ावत का अलम बरदार हूँ महश्र बदश्रामाँ[1] हूँ
फ़रिशतों ने जिसे सजदे किये हैं मैं वह इन्साँ हूँ

पुरानी दुश्मनी है अहल-ए-ज़र[2] के आसतानों से
मैं बिजली हूँ गिरा करता हूँ अकसर आसमानों से

मैं बादल बन के सहराओं पे मँडलाया किया बरसों
मैं बिजली बनके काशानों[3] पे लहराया किया बरसों

मेरे ही दम क़दम से बज़्म-ए-फ़ितरत में उजाला है
मुझे आँधी ने लोरी दी है तूफ़ानों ने पाला है

जुनूं के राग गाता हूँ लहू के अश्क रोता हूँ
हमेशा कुश्तगान-ए-ग़म[4] की पहली सफ़ में होता हूँ

नज़र आने लगी हैं फिर मेरे ख़्वाबों की ताबीरें
मेरे पा-ए-जुनूं पर लोटती फिरती हैं तक़दीरें

मेरे सीने में मुसतक़बिल के जलवे मुसकुराते हैं
मेरी गुफ़तार सुनकर अहल-ए-दौलत काँप जाते हैं

□

---

1. हंगामा लिये हुए 2. अमीर लोग 3. घर 4. ग़म के मारे हुए।

بس اِس تقصیر پر اپنے مقدّر میں ہے مرجانا
تبسّم کو تبسّم کیوں، نظر کو کیوں نظر جانا
خرد والوں سے حسن و عشق کی تنقید کیا ہوگی
نہ افسونِ نگہ سمجھا نہ اندازِ نظر جانا
مئے گل فام بھی ہے سازِ عشرت بھی ہے ساقی بھی
مگر مشکل ہے آشوبِ حقیقت سے گذر جانا
غمِ دوراں میں گذری جس قدر گذری جہاں گذری
اور اس پر لطف یہ ہے زندگی کو مختصر جانا

۱۹۴۵ء

बस इस तक़सीर[1] पर अपने मुक़द्दर में है मर जाना
तबस्सुम को तबस्सुम क्यूँ, नज़र को क्यूँ नज़र जाना

ख़िरद वालों से हुस्न-ओ-इश्क़ की तनक़ीद[2] क्या होगी
न अफ़सून-ए-निगह[3] समझा न अन्दाज़-ए नज़र जाना

मय-ए-गुलफ़ामभी है साज़-ए-इशरत भी है साक़ी भी
मगर मुश्किल है आशोब[4]-ए-हक़ीक़त से गुज़र जाना

ग़म-ए-दौराँ में गुज़री जिस क़दर गुज़री जहाँ गुज़री
और इस पर लुत्फ़ यह है ज़िन्दगी को मुख़्तसर जाना

1945

□

---

1. ग़लती 2. अच्छाई बुराई निकालना 3. नज़र का जादू
4. हक़ीक़त की मन्ज़िल ।

غزل

دلِ خوں گشتۂ جفا پہ کہیں
اب کرم بھی گراں نہ ہو جائے
تیرے بیمار کا خدا حافظ
نذرِ چارہ گراں نہ ہو جائے
عشق کیا کیا نہ آفتیں ڈھائے
حسن گر مہرباں نہ ہو جائے
مے کے آ گے غموں کا کوہِ گراں
اک پل میں دھواں نہ ہو جائے
پھر مجازؔ اِن دِنوں یہ خطرہ ہے
دِل ہلاکِ بتاں نہ ہو جائے

۱۹۵۱ء

ग़ज़ल

दिल-ए-ख़ूँ गशता-ए-ज़फ़ा[1] पे कहीं
अब करम भी गराँ न हो जाए

तेरे बीमार का ख़ुदा हाफ़िज़
नज़र-ए-चाराह गराँ[2] न हो जाए

इश्क़ क्या क्या न आफ़तें ढाए
हुस्न गर मेहरबाँ न हो जाए

मय के आगे ग़मों का कोह-ए-गराँ
एक पल में धुआँ न हो जाए

फिर 'मजाज़' इन दिनों यह ख़तरा है
दिल हलाक-ए-बुताँ[3] न हो जाए !

1951

□

---

1. मुसीबत का मारा दिल 2. इलाज करना 3. महबूब ।

غزل

دردکی دولتِ بیدار عطا ہو ساقی
ہم بھی خواہ سبھی کے ہیں بھلا ہو ساقی

سخت جاں ہی نہیں ہم خود سر و خوددار بھی ہیں
ناوکِ نازخطا ہے تو خطا ہو ساقی

سعیٔ تدبیر میں مضمر ہے اِک آہِ جاں سوز
اس کا انعام سزا ہو کہ جزا ہو ساقی

سینۂ شوق میں وہ زخم کہ لَو دے اٹھے
اور بھی تیز زمانے کی ہوا ہو ساقی

آمدِ صبا اٹھی ہیں سنسان ہے میخانۂ شوق
اب تو اِک سجدۂ معصوم روا ہو ساقی

۱۹۵۴ء

ग़ज़ल

दर्द की दौलत-ए-बेदार अता हो साक़ी
हम बहीख्वाह[1] सभी के हैं भला हो साक़ी

सख्त जाँ ही नहीं हम खुद सर-ओ-खुद्दार भी हैं
नावक-ए-नाज़ खता है तो खता हो साक़ी

सई[2]-ए-तदबीर में मुज़मिर[3] है एक आह-ए-जाँ सोज़
इसका इनआम सज़ा हो कि जज़ा हो साक़ी

सीना-ए-शौक़ में वह ज़ख्म के लौ दे उठे
और भी तेज़ ज़माने की हवा हो साक़ी

आँधियाँ उठी हैं सुनसान है मयखाना-ए-शौक़
अब तो इक सजदा-ए-मासूम रवा हो साक़ी

1954

□

---

1. भलाई चाहने वाला 2. कोशिश 3. छिपा हुआ।

غزل

یہ تیرگیٔ شب ہی کچھ صبح طراز آتی
خود وعدۂ فردا کی چھاتی بھی دھڑک جاتی

ہونٹوں پہ ہنسی پیہم آتے ہوئے شرماتی
اب رات نہیں کٹتی، اب نیند نہیں آتی

جو اوّل و آخر تھا وہ اوّل و آخر ہے
میں نالہ بجاں اٹھتا وہ نغمہ بساز آتی

سوزِ شبِ ہجراں پھر سوزِ شبِ ہجراں ہے
شبنم بہ مژہ اٹھتی یا زلفِ دراز آتی

یارب وہ جوانی بھی کیا محشرِ ارماں تھی
انگڑائی بھی جب لیتی اک آنکھ جھپک جاتی

آغازِ سیہ مستی، انجامِ سیہ مستی
آئینہ میں صورت بھی آنے کی قسم کھاتی

سینے میں مجاز اب تک وہ جذبۂ کافر تھا
تثلیث کی جوئندہ وحدت کی قسم کھاتی

۱۹۵۲ء

ग़ज़ल

यह तीरगी-ए शब ही कुछ सुबह तराज़ आती
ख़ुद बादा-ए-फ़रदा[1] की छाती भी धड़क जाती

होंठों पे हँसी पीहम आते हुए शर्माती
अब रात नहीं कटती, अब नींद नहीं आती

जो अव्वल-ओ-आख़िर था वह अव्वल-ओ-आख़िर है
मैं नाला बजा उठता वह नग़मा बसाज़ आती

सोज़-ए-शब-ए-हिजराँ[2] फिर सोज़-ए-शब-ए-हिजराँ है
शबनम पे मिज़ह उठती या ज़ुल्फ़ दराज़ आती

या रब वह जवानी भी क्या महश्र-ए-अरमाँ थी
अँगड़ाई भी जब लेती एक आँख झपक जाती

आग़ाज़-ए-सियाह मसती, अन्जाम-ए-सियाह मसती
आईने में सूरत भी आने की क़सम खाती

सीने में 'मजाज़' अब तक वह जज़बा-ए-काफ़िर था
तसलीस की जोयनदा वहदत[3] की क़सम खाती !

1954

□

---

1. पुराना वायदा 2. जुदाई की रात 3. ख़ुदा को एक मानना ।

غزل

نہ رہ نما نہ کسی رہگذر کو دیکھتے ہیں
جدھر سے تیر چلے ہیں ادھر کو دیکھتے ہیں
جبینِ گرم بہ تمکینِ ناز کیا کہیے
کبھی فریبِ قضا و قدر کو دیکھتے ہیں
نگاہ آڑ نہ لے معصیت پناہی کی
ابھی تو وسعتِ دامانِ تر کو دیکھتے ہیں
سوادِ نجد کی رعنائیوں میں گم یکسر
کسی سفیر کے عزمِ سفر کو دیکھتے ہیں

۱۹۵۴ء

ग़ज़ल

न रहनुमा न किसी रहगुज़र[1] को देखते हैं
जिधर से तीर चले हैं उधर को देखते हैं

जबीन-ए-गर्म ब तमकीन-ए नाज़ क्या कहिये
अभी फ़रेब-ए-क़ज़ा-ओ-क़दर को देखते हैं

निगाह आड़ न ले मासियत पनाह[2] की
अभी तो वुसअत-ए-दामान-ए-तर को देखते हैं

सवाद-ए-नज्द की रानाइयों में गुम यकसर
किसी सफ़ीर के अज़्म-ए-सफ़र[3] को देखते हैं

1954

□

---

1. रास्ता चलनेवाला 2. गुनाहों से पनाह मांगना 3. सफ़र का इरादा।

غزل

رعشہ سا جو یاں دست و گریباں میں دیکھا
ہندو میں نہ پایا نہ مسلمان میں دیکھا
سفاک سے ابرو یہ غضبناک سی آنکھیں
اک داغ سا ہر قلب پُر ارمان میں دیکھا
فرخندہ جبیں ہو کے بھی شمشیر بکف ہے
شیطان نے کیا سینۂ انسان میں دیکھا
اب درد کلیجے سے لگائے ہوئے پھرئیے
ایمان سے پایا ہے نہ ایمان میں دیکھا
اس سے تو تجاوز آپ بھی بے بہرہ ہیں شاید
جو سوزِ وفا آپ کے ہذیان میں دیکھا

۱۹۵۴ء

ग़ज़ल

राशा-जो यां दस्त-ओ-गरीबान में देखा
हिन्दू में न पाया न मुसलमान में देखा

सफ़्फ़ाक से अबरू थे ग़ज़बनाक-सी आँखें
एक दाग़-सा हर क़ल्ब-ए-पुर अरमान में देखा

फ़रखन्दा[1] जबीं होके भी शमशीर बकफ़ है
शैतान ने क्या सीना-ए-इन्सान में देखा

अब दर्द कलेजे से लगाए हुए फिरये
ईमान से पाया है न ईमान में देखा

इससे तो 'मजाज़' आप भी बे बहरा हों शायद
जो सोज़-ए-वफ़ा[3] आपके हिज़यान में देखा

1954

□

---

1. हँसती हुई 2. तलवार हाथ में लिये।

گیت

کیسی تباہی آئی
جی بیٹھ گیا من ہارا اب سوتا ہے جگ سارا
ہر پگ پر دُکھ کے کانٹے ہر راہ میں گھور اندھیرا
ہر سمت اُداسی چھائی
کیسی تباہی آئی
اک جوت جگا کر پل میں وہ چاند چھپا بادل میں
اب کوئی نہیں ہے اپنا اس جیون کے جنگل میں
ہر سانس ہے اک دہائی
کیسی تباہی آئی
سپنوں کے محل سب ٹوٹے آشا کے دیپ بجھائے
بپتا کی آندھی اُٹھی دُکھ درد کے بادل چھائے
آفت کی گھٹا منڈلائی
کیسی تباہی آئی

गीत

कैसी तबाही आई

जी बैठ गया मनहारा
अब सूना है जग सारा
हर पग पर दुःख के काँटे
हर राह में घोर अन्धेरा

हर सिम्त उदासी छाई
कैसी तबाई आई
एक जोत जगाकर पल में
वह चाँद छुपा बादल में

अब कोई नहीं है अपना
इस जीवन के जँगल में
हर साँस है एक दुहाई
कैसी तबाही आई

सपनों के महल सब ढाए
आशना के दीप बुझाए
विपता की आँधी उठी
दुःख दर्द के बादल छाए

आफ़त की घटा मँडलाई
कैसी तबाही आई

□

اُردو کے مقبول شاعروں

کی چنیدہ شاعری اب
اُردو اور ھندی رسم الخط میں ایک ساتھ!

سٹار پاکٹ سیریز کے زیرِ اہتمام ایک نیا سلسلہ شروع
کیا جارہا ہے۔ جس میں
آپ کے پسندیدہ اُردو شاعروں کے کلام کا انتخاب
اردو۔ ہندی دونوں زبانوں میں آمنے سامنے
پیش کیا جارہا ہے۔ اس سلسلے کی پہلی پانچ کتابیں اسی
ماہ پیش کی جارہی ہیں۔
اگر قارئین کرام کو یہ کتابیں پسند آئیں۔
تو ہماری یہ کوشش ہوگی
کہ اردو کے سبھی مقبول اور پسندیدہ شاعروں کا منتخب
کلام اس سلسلے کے تحت پیش کیا جائے۔
قارئین سے گذارش ہے کہ ان کتابوں کے بارے میں
اپنی گرانقدر رائے سے ضرور نوازیں۔

ناشر